श्री प्राणनाथ महिमा

लेखक
श्री राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ महिमा

लेखक

श्री राजन स्वामी

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड, सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र.

www.spjin.org

सर्वाधिकार सुरक्षित

© २०१०, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट

पी.डी.एफ. संस्करण – २०१८

दो शब्द

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छुड़ाइयो खिन।

लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।।

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी!

शाश्वत सत्य की अवहेलना किसी भी दृष्टि से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के लिये घातक होती है। सत्य का अनुशरण किये बिना तो अध्यात्म के पथ पर एक कदम भी नहीं चला जा सकता।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि तारतम वाणी परब्रह्म के आवेश से अवतरित हुई है तथा उन्हीं के आदेश से श्री लालदास जी के द्वारा श्री बीतक साहब की भी रचना की गयी है। ऐसी स्थिति में दोनों ग्रन्थों के कथनों का

उल्लंघन श्री राज जी के आदेशों की अवहेलना है और ऐसा करना महान अपराध है।

यदि निष्पक्ष हृदय से श्रीमुखवाणी एवं बीतक साहब के ज्ञान सागर में गोता लगाकर अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनी जाये, तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि श्री प्राणनाथ जी कोई सन्त, कवि, भक्त, मनीषी, या श्री देवचन्द्र जी के शिष्य नहीं हैं, बल्कि सच्चिदानन्द परब्रह्म ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि हम श्री प्राणनाथ जी के वास्तविक स्वरूप को उजागर करें।

विगत कुछ वर्षों से श्रीमुखवाणी एवं बीतक साहब के परम सत्य को झुठलाते हुए श्री जी (श्री प्राणनाथ जी)

को एक सन्त, कवि, भक्त, शिष्य, और महापुरुष के रूप में चित्रित करने का दुष्प्रयास किया जा रहा है। यह प्रयास वैसे ही है जैसे हिमालय पर्वत को फूँक मारकर उड़ा देने का दिवास्वप्न देखना। भला, कुछ हल्के बादलों से संसार को प्रकाशित करने वाला सूर्य कैसे ढका जा सकता है। ब्रह्मवाणी के अखण्ड ज्ञान की शीतल हवा जैसे ही बहेगी, बादलों का नामोनिशान भी नहीं रहेगा और चारों ओर श्री प्राणनाथ जी की महिमा ही गुंजित होगी।

आपका

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

सरसावा

अथ श्री प्राणनाथ महिमा

मेरे प्राणवल्लभ! प्राण प्रियतम! तू अनादि है, अनन्त है, सर्वशक्तिमान है, सकल गुण निधान है, सर्व अन्तर्यामी है। अपनी तारतम वाणी के रूप में तू अपने धाम, स्वरूप, एवं लीला के ज्ञान को लेकर आया है। युगों–युगों से तुझे खोजने वाले ऋषियों, मुनियों, और पैगम्बरों की आँखें तेरी बाट देखते–देखते पथरा गई हैं।

मेरे प्राणेश्वर! लौकिक दु:खों की दावाग्नि धधक कर जल रही है। इनमें दग्ध होने वाले प्राणियों के ऊपर तू अपनी मेहर की अमृत वर्षा क्यों नहीं करता ? तेरी आत्मायें तुझे पुकार रही हैं। तू इन्हें अपनी पूर्ण पहचान देकर दीदार क्यों नहीं देता और अपने साथ निजधाम क्यों नहीं ले चलता?

सुनियों दुनिया आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।

जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।

किन सुपने न श्रवणों, सो इत मिल्या नर नार।।

सनंध ३३/१,३

अब प्रस्तुत है श्री प्राणनाथ जी की अनन्त महिमा के फूलों की कुछ पँखुड़ियाँ।

(१)

स्थान– हब्शा कारागार।

(श्री मिहिरराज, स्यामल जी, और उद्धव जी नजरबन्दी की अवस्था में है। मिहिरराज जी का तन अस्थिपञ्जर के रूप में दिखायी पड़ रहा है। आँसुओं के मोती गालों पर लुढ़के पड़े हैं। विरह में तड़पते हुए मिहिरराज जी की साँसे थम जाती हैं।

किन्तु यह क्या? सामने एक अलौकिक ज्योति प्रकट होती है। उसमें से युगल स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं। एक अति मधुर आवाज श्री इन्द्रावती जी को सुनायी पड़ती है)

श्री राज जी– इन्द्रावती! तूने यह क्या किया? मेरे विरह में अपना तन ही छोड़ दिया। मैं तो तुम्हारे ही अन्दर

विराजमान था।

इन्द्रावती जी– (खुशी के आँसुओं के साथ) मेरे प्राणवल्लभ! मुझे तो जरा भी अहसास नहीं था कि आप मेरे ही अन्दर बैठे हैं। आपने दीदार देकर मेरी आस पूरी की है।

अचानक ही श्री इन्द्रावती जी को श्यामा जी की जगह श्री देवचन्द्र जी दिखायी देते हैं। श्री इन्द्रावती जी अचम्भित नेत्रों से उन्हें निहार रही हैं। स्वगत (मन ही मन) अरे! यह मैं क्या देख रही हूँ? मैंने तो प्रियतम को पाने के लिये जिस सद्गुरु से होड़ बाँध रखी थी, वे तो उन्हीं के धाम हृदय में विराजमान थे। आड़िका लीला में श्री कृष्ण जी का रूप देखकर मैं भ्रमित हो गयी थी। मुझसे तो बहुत बड़ा अपराध हो गया है।

पुनः एक मधुर आवाज श्री इन्द्रावती जी के कानों में अमृत घोल जाती है–

इन्द्रावती! तू क्या सोच रही है? सद्गुरु रूप में मैं ही तुम्हारे सामने था, किन्तु तुमने मुझे नहीं पहचाना।

इन्द्रावती जी– लगता है, मेरी इस भूल का कोई भी प्रायश्चित नहीं है।

श्री राज जी– तू इसकी चिन्ता न कर। अब मैं प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारे धाम हृदय में विराजमान होकर जागनी की लीला करूँगा।

इन्द्रावती जी– मेरे प्राणेश्वर! क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप मेरे अतिरिक्त किसी अन्य आत्मा के अन्दर बैठें, ताकि मैं आपको जी भरकर रिझा सकूँ।

श्री राज जी– नहीं, कदापि नहीं। यह तो सारी शोभा

मैंने तुझे दे रखी है। अब सारा संसार तुझे ही अक्षरातीत के रूप में जानेगा। तुम्हारे ही तन से मैं परमधाम की वाणी का अवतरण कराऊँगा, जिससे सभी आत्मायें जाग्रत होंगी।

इन्द्रावती जी– क्या मेरी भूल की यही सजा है?

श्री राज जी– (मुस्कराते हुए) हाँ इन्द्रावती! अब वह समय बीत चुका है। तुम्हारे धाम हृदय में विराजमान हो जाने के बाद अब संसार तुम्हे रिझायेगा। आज से तू पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द का स्वरूप है।

❖❖❖❖❖

मैं तो अपना दे रही, पर तुमहीं राख्यो जीउ।

बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पीउ।।

क. हि. ८/९

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि हे धनी! मैंने तो हब्शे में ही अपने तन को छोड़ दिया था, किन्तु आपने ही मेरे तन को जीवित रखा तथा अपने आवेश का बल देकर जागनी कार्य के लिये निर्देश दिया।

लगे चरचा करने, बरनन बानी सरूप।

यों करते दिल खुला, बैठे दिल सुन्दर रूप अनूप।।

बी. सा. १७/४७

हब्शे में श्री इन्द्रावती जी के अन्दर श्री राजश्यामा जी का अलौकिक स्वरूप विराजमान हो गया और उनके मुखारविन्द से ब्रह्मवाणी का अवतरण प्रारम्भ हो गया।

महामति कहे ए मोमिनों, ए हादी मेहेदी इमाम।

ताकी बीतक और कहों, जो नूर दीन इस्लाम।।

बी. सा. १७/६८

अर्थात् आज से इस स्वरूप को मिहिरराज कहकर सम्बोधित नहीं किया जा सकता, बल्कि ये हैं– पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत, आत्माओं के प्राणवल्लभ, सभी प्राणियों को भवसागर से पार ले जाने वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक एवं आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां।

(२)

(श्री जी दीवबन्दर में जयराम भाई के यहाँ पहुँचते हैं। उन्हें देखते ही जयराम भाई आनन्द में विभोर हो जाते हैं)

जयराम भाई– अरे! मिहिरराज! आप यहाँ?

श्री जी– (मुस्कराते हुए) हाँ भाई! (दोनों गले मिलते हैं)

जयराम भाई– मिहिरराज! आज अचानक ही आप यहाँ कैसे आए?

श्री जी– धनी के ही आदेश से यहाँ मात्र तुम्हारे लिये ही मैं आया हूँ।

(गृह के अन्दर बरामदे में दोनों ही अपने–अपने आसनों पर बैठ जाते हैं और श्री जी बोलना प्रारम्भ कर देते हैं)

श्री जी– जयराम भाई! दीप बन्दर में रहते हुए तुम्हें इतने वर्ष हो गये। जरा, यह तो बताओ कि तुमने कितने सुन्दरसाथ को जाग्रत किया है? परमधाम के सम्बन्ध से तुमने आज तक मुझे कोई पत्र भी नहीं लिखा। सद्गुरु महाराज के धामगमन के पश्चात् होने वाले संस्कार में भी तुम नहीं आये। इस भूल पर तुम्हें जरा भी शर्म नहीं आयी।

(जयराम जी गहन चिन्तन में डूब जाते हैं। उनके चेहरे पर पश्चाताप् के भाव झलक रहे हैं)

श्री जी– यह तो बताओ कि इस बुढ़ापे में कब तक कांसे के बर्तन बनाते रहोगे? कहलाने को तो तुम ब्रह्मसृष्टि हो, किन्तु राज जी की ओर तुम्हारा जरा भी ध्यान नहीं है। यह तो सोचो तुम्हारी जिन्दगी में कितने दिन बाकी है? तुम्हारी स्थिति उस कुत्ते की तरह है, जो

सूखी हड्डी को चूसकर अपना ही खून पीता है और खुश होता है कि मैं रक्त और मांस का सुख ले रहा हूँ। तुम तो माया में इतने डूब गये हो कि अब तुम्हें ब्रह्मज्ञान की चर्चा एवं चितवनि से कोई सरोकार ही नहीं रह गया है।

जयराम भाई– (रोते हुए) हे मिहिरराज! यह तो धाम धनी की अपार कृपा है, जो उन्होंने आपको हमारे पास भेज दिया है। यदि हमें श्री राज जी की वास्तविक पहचान हो गयी होती, तो हम इस प्रकार माया में क्यों डूबते? ऐसा लगता है कि सदगुरू महाराज आपके अन्दर साक्षात् बैठकर लीला कर रहे हैं।

(इस प्रकार दोपहर तक चर्चा चलती रहती है। घर के सभी लोग वहाँ एकत्रित हो गये होते हैं)

जयराम भाई– (स्वगत) अब तो यह निश्चित ही हो गया कि मेरे घर स्वयं श्री राज जी ही पधारे हैं। इसलिये, मुझे उसी भाव से इनकी सेवा करनी चाहिए।

(प्रगट रूप में) मेरे धाम धनी! अब दोपहर का समय हो गया है। भोजन तैयार है, इसलिये आप कृपा करके उसे ग्रहण करने का कष्ट करें।

(श्री प्राणनाथ जी उठकर स्नानगृह में जाते हैं। तत्पश्चात् नवीन वस्त्र धारण कर भोजन करते हैं। भोजन कर लेने के पश्चात्––)

जयराम जी सहित परिवार के कई सदस्य– कृपा निधान! शय्या तैयार है। आप पौढ़ने की कृपा कीजिए। यात्रा से थके होंगे।

श्री जी– (मुस्कराते हुए) मैं यहाँ आराम करने के लिये

नहीं आया हूँ। यहाँ पर मेरे आने का मुख्य प्रयोजन तुम्हें जागृत करना है। (गम्भीर स्वर में) जयराम भाई! तुम उस व्रज लीला को याद करो, जिसमें तुम्हारी आत्मा भी अन्य गोपियों के साथ ही थी। व्रज में तुम्हें श्री राज जी के अतिरिक्त अन्य किसी की भी चाहना नहीं थी। योगमाया में जाने के समय भी तुमने पल भर में इस मायावी संसार का परित्याग कर दिया था। क्या तुम उस लीला को भूल गये हो? रास के पश्चात् परमधाम जाकर तुम पुनः इस नये जागनी के ब्रह्माण्ड में आये हो। अब अपने मूल स्वरूप एवं धाम धनी की पहचान करो।

जयराम भाई सहित सम्पूर्ण परिवार– (बहुत ही भावुक होकर) धाम धनी! अब हमें आपके स्वरूप की पहचान हो चुकी है। हमारी तो बस एक ही प्रार्थना है कि आप हमसे किसी भी स्थिति में अलग न होइए।

❖❖❖❖❖

सम्वत सत्रह सै बाइसे, दीप पधारे श्री राज।

दोए बरस तहां रहे, सब पूरे मनोरथ काज।।

बी.सा. २१/१५

विक्रम संवत् १७२२ में श्री प्राणनाथ जी (श्री राज जी) दीपबन्दर पधारे। वहाँ दो वर्ष तक जागनी लीला करते रहे और सभी सुन्दरसाथ को आत्मिक आनन्द देते रहे।

कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या तत्काल।

तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल।।

रास १/७६

धाम धनी ने हमारे पर इतनी महान कृपा की है कि वे श्री देवचन्द्र जी का तन छोड़कर तुरन्त ही श्री मिहिरराज जी के अन्दर आ चुके हैं। इस प्रकार वे पुन: हमारे

सम्मुख हैं। अब हमें पहले जैसी ही प्रेम रस से भरी हुई मीठी चर्चा सुनने को मिल रही है।

सोई नसीहत देत सजन, खैंचत तरफ वतन।

पिउ पुकारे बेर दूसरी, अब क्यों होए पीछे आपन।।

प्र. हि. १७/३

श्री राज जी श्री इन्द्रावती जी के धाम हृदय में विराजमान होकर पहले तन (श्री देवचन्द्र जी) की तरह ही सिखापन दे रहे हैं और हमें पुकार कर बुला रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम उनके प्रति समर्पित होने में पीछे क्यों रहें?

तो वचन तुमको कहे जाए, जो तुम धाम की लीला मांहें।

व्रज वालो पिऊ सो एह, वचन अपन को कहत हैं जेह।।

प्र. हि. २९/६१

रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।

धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथ को बुलावन आए।।

प्र. हि. २९/६२

जिस अक्षरातीत ने व्रज एवं रास में श्री कृष्ण जी के रूप में लीला की थी, अब वही धनी श्री मिहिरराज जी के अन्दर विराजमान हैं और जागनी लीला कर रहे हैं।

(३)

(श्री प्राणनाथ जी ठट्ठानगर में विराजमान हैं। उनके चारों ओर सुन्दरसाथ बैठे हुए वार्ता कर रहे हैं)

सुन्दरसाथ– धाम धनी! यहाँ पर चिन्तामणि नाम के एक आचार्य हैं, जो कबीर पन्थ के अनुयायी हैं। उनके लगभग एक हजार शिष्य हैं और वे बहुत बड़े योगाभ्यासी भी हैं। यदि आप उनसे मिलकर, तारतम ज्ञान की अमृतधारा उन्हें भी प्रदान करें, तो निश्चय ही उनकी आत्मा जाग्रत हो जायेगी।

श्री जी– बहुत अच्छी बात है। चलो चलते हैं।

(श्री प्राणनाथ जी कुछ सुन्दरसाथ के साथ चिन्तामणि जी के निवास पर पहुँचते हैं। चिन्तामणि जी श्री जी को देखते ही बहुत प्रसन्न होते हैं और अभिवादन करके उन्हें

सम्मानपूर्वक बैठाते हैं)

चिन्तामणि– मान्यवर! आप कहाँ से आये हैं? मेरी यही इच्छा है कि आप मुझसे आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करें। या तो आप सुनाइये या मैं सुनाऊँ। यदि आप कहें तो मैं आपको विष्णु भगवान, ज्योति स्वरूप, या आदि नारायण का साक्षात्कार करा सकता हूँ। इसके अतिरिक्त दस अनहदों की मधुर ध्वनि का भी मैं अनुभव करा सकता हूँ। यदि इनकी अनुभूति करने की आपकी इच्छा नहीं है, तो आपने जो कुछ भी आध्यात्मिक उपलब्धि की है, मुझे भी उसका साक्षात्कार कराने का कष्ट करें।

श्री जी– मैं तो आपके पास कुछ लेने आया हूँ। आप आत्म–ज्ञान सम्बन्धी सत्य को दर्शाने का कष्ट करें।

चिन्तामणि– सच्चा ब्रह्मज्ञान तो कबीर जी ने ही कहा है,

किन्तु कमाल जी का ज्ञान तो कबीर जी से भी ऊँचा है। वस्तुत: कबीर जी परमात्मा के आधे भक्त हैं और कमाल जी पूरे भक्त।

श्री जी– मुझे बहुत ही खेदपूर्वक यह कहना पड़ रहा है कि आपका यह कथन बिना सोचे–विचारे ही कहा गया है। कबीर जी अक्षर ब्रह्म की वासना हैं, जबकि कमाल जी माया के जीव हैं। देखिए, कबीर जी ने हद–बेहद से भी परे परमधाम में होने वाली घटना का कितना मनोरम वर्णन किया है–

सच्चिदानन्द परब्रह्म ने अपने हृदय में यह संकल्प लिया कि अक्षरब्रह्म तथा आनन्द अंग सहित आत्माओं को अपनी पूर्ण पहचान देनी है। उनकी यह इच्छा रूपी गंगा सम्पूर्ण परमधाम में फैल गयी। उस इच्छा रूपी गंगा के जल में सत् अंग तथा आनन्द अंग पूर्णतया डूब गये।

परब्रह्म की आदेश शक्ति ने सभी धर्मग्रन्थों में इसकी साक्षियां लिखवा दी और उसी के आदेश से इस त्रिगुणात्मक ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है। कबीर जी कहते हैं कि इसके रहस्य को जानने वाला तो मेरा भी सद्गुरू (परब्रह्म) होगा।

चिन्तामणि– (धीमे स्वर में) प्रिय शिष्यों! मेरे गुरूदेव ने काशी में कहा था कि इसके रहस्य को केवल परब्रह्म स्वरूप सद्गुरू ही खोल सकते हैं। वे भविष्य में तुमसे अवश्य मिलेंगे। ऐसा लगता है कि आज उनकी भविष्यवाणी सत्य हो गयी है।

(चिन्तामणि अभी शिष्यों से कह ही रहे होते हैं कि श्री जी अचानक उठकर चल देते हैं। कुछ दिनों के पश्चात् चिन्तामणि श्री जी को खोजते–खोजते उनके निवास पर पहुँच जाते हैं। उस समय चर्चा चल रही होती है)

श्री जी– अध्यात्म का विषय बहुत ही गहन होता है। वास्तविक सत्य की प्राप्ति के लिये लौकिक प्रतिष्ठा एवं "महन्त" पद के अभिमान को छोड़ना आवश्यक होता है.....।

(चर्चा समाप्त होने के पश्चात् एकान्त में)

चिन्तामणि– मैं तो आपकी शरण में आ ही चुका हूँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप एकान्त में भले ही मेरी कितनी भी खण्डनी क्यों न करें, किन्तु मेरे शिष्यों के सामने मेरी गरिमा का ध्यान अवश्य रख लेने की कृपा करें।

श्री जी– चिन्तामणि जी! मेरा उद्देश्य किसी को अपमानित करना नहीं है। यदि मैं खण्डनी के कुछ वचन भी कहूँगा, तो आपकी मर्यादा की रक्षा करते हुए ही

कहूँगा। आप निश्चिन्त रहें।

अगले दिन प्रात:काल का समय है। श्री जी चर्चा के लिये आसन पर विराजमान हैं। नेपथ्य में (पर्दे के पीछे से) बहुत ही मधुर ध्वनि आती है–

सुनो रे सत के बनजारे, एक बात कहूं समझाई।

या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रहया उरझाई।।

आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटिएं दई उलटाई।

बंध पर बंध दिए विध विध के, सो खोली किनहूं न जाई।।

महामति कहे सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरो आई।

झूठी छूटे सांची पाइए, सतगुरु लीजे रिझाई।।

कि. ५/१,२,११

श्री जी– सत्य की राह पर चलने की आकांक्षा रखने वाले मेरी बात सुनो। माया के फन्दे में सभी प्राणी इस प्रकार फँसे हुए हैं कि चाहकर भी इससे निकल नहीं पाते। मात्र गृह त्यागकर महन्त बनने से ही अध्यात्म के चरम लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता। ज्ञान के अभिमान को छोड़कर परमधाम के ज्ञान की वर्षा करने वाले सद्गुरु की शरण में स्वयं को समर्पित होना चाहिए।

(चिन्तामणि जी भाव विह्वल होकर खड़े हो जाते हैं)

चिन्तामणि जी– मेरे प्राणनाथ! आपकी ज्ञानमयी लाठी से मैंने अपने अज्ञान रूपी काले कुत्ते को मार डाला है। अब मैं अपना सर्वस्व आपको समर्पित करता हूँ।

(सेवकों को सम्बोधित करते हुए) प्रिय शिष्यों! ये परब्रह्म के साक्षात् स्वरूप हैं। मैंने अपना शीश इनके

चरणों में समर्पित कर दिया है। मेरे पास अखण्ड धाम का कुछ भी ज्ञान नहीं है। तुम सभी मेरी तरह ही इनकी शरण में आ जाओ।

❖❖❖❖❖

भानो भरम वचन देखकर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर।

श्री धाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए।।

प्र. हि. १३/२

हे साथ जी! तारतम वाणी के वचनों से अपने संशयों को दूर कीजिए तथा अज्ञानता की नींद को हटाइए। स्वयं पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री इन्द्रावती जी के धाम हृदय में विराजमान होकर लीला कर रहे हैं।

सेवा कीजे पेहेचान चित्त धर, कारन अपने आए फेर।

भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।।

प्र. हि. १३/३

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करके सेवा करने का यह सुनहरा अवसर है। अपनी तारतम वाणी से उन्होंने हमें सावधान भी कर दिया है। हमें जगाने के लिये ही श्री राज जी (श्री प्राणनाथ जी) श्री देवचन्द्र जी का तन छोड़कर श्री महामति जी के धाम हृदय में प्रकट हो गये हैं।

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।

याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ।।

प्र. हि. ३७/१०२

वेद–कतेबों में हमारी साक्षियां हैं। इनके गुह्य रहस्यों को मात्र हम ही जानते हैं क्योंकि स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी (श्री राज जी) हमारे धाम हृदय में

विराजमान होकर सभी रहस्यों को उजागर कर रहे हैं।

(४)

(सेठ लक्ष्मण दास (लालदास जी) ठट्ठा नगर के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं। एक दिन गोदाम में उनकी वार्ता अपने एक कर्मचारी चतुरा नामक ब्राह्मण से होती है)

चतुरा– सेठ जी! आप तो स्वयं गीता एवं भागवत् के प्रकाण्ड विद्वान हैं, किन्तु यह बताइये कि अखण्ड व्रज और रास की लीला कहाँ पर हो रही है?

लालदास जी– अखण्ड व्रज और रास को देखने के लिये दिव्य दृष्टि चाहिए। इन चर्म–चक्षुओं से अखण्ड की लीला को नहीं देखा जा सकता।

चतुरा– आप दिव्य दृष्टि कब पायेंगे? ऐसी अवस्था में आपकी आत्मा कब जाग्रत होगी? जब महाप्रलय में पाँच तत्व वाले इस त्रिगुणात्मक ब्रह्माण्ड का ही नाश हो जायेगा, तो यह बताने का कष्ट करें कि उस समय अखण्ड व्रज और अखण्ड रास का अस्तित्व कहाँ पर होगा?

लालदास– (मन ही मन) यह तो आज दिन तक मुझे मालूम ही नहीं हो सका है। (प्रकट रूप में) अच्छा, यह तो बताओ कि तुमने इस प्रकार का अलौकिक ज्ञान कहाँ पर सुना है?

चतुरा– इस नगर में एक अलौकिक महापुरूष आये हुए हैं। उनके मुखारविन्द से ही मैंने यह ज्ञान प्राप्त किया है।

लालदास जी– तुम मुझे उनके चरणों की छत्रछाया में

ले चलो।

चतुरा– सेठ जी! बिना उनकी स्वीकृति के आपको उनके पास नहीं ले जा सकता।

(अगले दिन चतुरा श्री जी के आदेश से लालदास जी को लाता है। श्री जी की दिव्य वाणी को सुनकर लालदास जी को अपार शान्ति मिलती है और वे तारतम ग्रहण कर लेते हैं। एक दिन बाग में टहलते समय उनकी अपने ही माली जिन्दादास से वार्ता होती है)

जिन्दादास– आप जिनके चरणों में चर्चा सुनने जाते हैं, क्या आपने उनके वास्तविक स्वरूप को भी पहचाना है?

लालदास जी– (मन ही मन) यह मेरा कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि मैं अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से ज्ञान एवं पहचान के क्षेत्र में बहुत पीछे हूँ। (प्रकट रूप में) भाई!

तुमने उन्हें जिस रूप में पहचाना है, उसे मुझे भी बताओ।

जिन्दादास– श्रीमद्भागवत् के बारहवें स्कन्ध में मारकण्डेय ऋषि की कथा है, जिन्होंने नारायण से यह प्रार्थना की थी कि उन्हें माया भी देखने को मिल जाये तथा वे अपने इष्ट (नारायण) के चरणों से अलग भी न हों। आदिनारायण ने उन्हें माया दिखायी तथा उन्हें माया से निकालने के लिये स्वयं आये। इसी प्रकार परमधाम की आत्मायें भी इस नश्वर जगत् में आयी हुई हैं तथा उन्हें जाग्रत करने के लिये स्वयं परब्रह्म श्री राज जी ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए हैं।

❖❖❖❖❖

अखण्ड व्रज एवं रास में श्री कृष्ण नाम से नूरी तन ही लीला कर रहे हैं। उनमें अक्षरातीत का आवेश नहीं है।

इसलिये, उन तनों को अक्षरातीत कहलाने की शोभा नहीं मिल सकती।

यदि ऐसा कहा जाये कि श्री कृष्ण शब्द अनादि है एवं परमधाम में श्री कृष्ण हैं, तो यह उचित नहीं, क्योंकि जब इस संसार के नश्वर शब्द बेहद में नहीं जा सकते तो परमधाम में कैसे जा सकते हैं?

बेहद को शब्द न पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचें दरबार।

लुगा ना पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार।।

क. हि. २४/४१

यह तथ्य भी हास्यास्पद ही है कि एकमात्र श्री कृष्ण नाम ही अक्षरातीत का नाम है। श्री जी या श्री प्राणनाथ शब्द तो मात्र विशेषण है।

सच्चिदानन्द परब्रह्म के अनन्त गुणों, लीला, एवं स्वभाव

के आधार पर वेद, कुरआन आदि धर्मग्रन्थों में बहुसंख्यक नामों का वर्णन है। ये सभी नाम विशेषणात्मक ही हैं। विशेषण से रहित कोई भी नाम निरर्थक हो जायेगा। श्री कृष्ण नाम भी विशेषणात्मक ही है, जिसके अर्थ प्राय: संक्षेप में इस प्रकार हैं – आकर्षणशील, काला, गहरा, नीला, व्यास, अर्जुन, अनिष्टकर इत्यादि।

व्याकरण की दृष्टि से एक ही शब्द के अनेकों अर्थ होते हैं, जिनका प्रयोग प्रसंग की दृष्टि से किया जाता है। अक्षरातीत को किसी भी भाषा के शब्द विशेष के बन्धन में नहीं बाँधा जा सकता।

अक्षरातीत ने व्रज में श्री कृष्ण नामक तन में ११ वर्ष ५२ दिन तक लीला की। यही कारण है कि अक्षरातीत के नामों में श्री कृष्ण शब्द का प्रयोग लौकिक साहित्य के

धर्मग्रन्थों में होने लगा। इसका मूल कारण उस तन में धनी के आवेश का होना था। आवेश के चले जाने के पश्चात् मथुराधीश श्री कृष्ण या द्वारिकाधीश श्री कृष्ण को कोई भी अक्षरातीत नहीं कहता। यदि शब्द मात्र ही अक्षरातीत है, तो वर्तमान में अनेक लोगों के नाम कृष्ण हैं। क्या वे सभी लोग अक्षरातीत ही कहे जायेंगे?

इस जागनी ब्रह्माण्ड में आवश्यकता है, अपनी आत्मा के प्रियतम अक्षरातीत को पहचानने की, जो श्री इन्दावती जी के धाम हृदय में विराजमान होकर लीला कर रहे हैं।

पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो ब्रज ने रास।

इंदावती सूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।।

षटऋतु ८/९

हे धनी! आप साक्षात् युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी इस जागनी ब्रह्माण्ड में लीला कर रहे हैं, किन्तु आड़िका लीला के माध्यम से मुझे व्रज एवं रास के रूपों (राधा–कृष्ण) में क्यों उलझाते रहे हैं? आपने मुझसे यह भेद अब तक क्यों छिपाए रखा? मुझे इसका उत्तर दीजिए।

आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ।

दरपण नूं सूं काम पड़े, ज्यारे पेहेरयूं ते कंकण हाथ।।

षटऋतु ८/१०

हे धनी! जब आपने मुझे अपने स्वरूप की पहचान करा दी है तो फिर व्रज–रास के उन रूपों की ओर मुझे क्यों ले जाते हैं, जो मात्र प्रतिबिम्ब की तरह हैं? जब हाथ में कँगन पहना गया हो, तो उसे प्रत्यक्ष ही देखा जा सकता है। उसे देखने के लिये दर्पण की आवश्यकता नहीं

पड़ती, अर्थात् जब श्री राजश्यामा जी धाम हृदय में प्रत्यक्षत: विराजमान हैं, तो प्रतिबिम्ब रूप व्रज–रास में भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है।

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम बात।

चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रुठा प्राणनाथ।।

रास २/१७

इसलिये हे साथ जी! मेरी एक अनुपम बात सुनिये। आप सभी हमेशा ही (दिन–रात) चर्चा सुनिये, ताकि अपने प्रियतम प्राणनाथ को पूर्ण रूप से रिझा सकें, जो पहले नहीं रिझा सके थे।

द्रष्टव्य– यद्यपि व्रज–रास में भी आत्माओं ने धनी को रिझाया था, किन्तु निद्रा में। अब जागनी लीला में जाग्रत होकर रिझाना है, इसलिये यहाँ चर्चा में लीन रहने की

बात कही गयी है।

बृज लीला लीला रास मांहें, हम खेलें जानके जार।

जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउ सों जान विलसे करतार।।

किरंतन ५४/१५

इस जागनी ब्रह्माण्ड में प्रियतम प्राणनाथ की पहचान किये बिना जाग्रत होने का दावा करना व्यर्थ है।

तुम ही उतर आए अर्स से, इत तुम ही कियो मिलाप।

तुम ही दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप।।

श्रृंगार २३/३१

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द परमधाम से आवेश द्वारा आकर श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान हो गये हैं और उन्होंने ही ब्रह्मवाणी का अवतरण कर सभी को

परमधाम की पहचान दी है।

विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउ जी बात।

आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देख अपन्यात्।।

प्र. हि. १०/१

हे धाम धनी! आपने मूल सम्बन्ध के कारण ही हमारे ऊपर विशेष कृपा की है और श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़कर श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर लीला कर रहे हैं। "ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण मां बेठा प्राणनाथ" (प्र. गु. ४/६) का कथन यही सिद्ध करता है कि श्री राज जी श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विराजमान होकर जागनी लीला कर रहे हैं।

(५)

स्थान– मस्कत बन्दर। महाव जी भाई अपनी दुकान में सो रहे हैं। आधी रात का समय है।

(अचानक उनके गाल पर एक जोरदार थप्पड़ पड़ता है। त.....ड़ा.....क। महावजी भाई घबड़ाकर उठकर बैठ जाते हैं)

महाव जी– (बुदबुदाते हुए) ओह! यह थप्पड़ मुझे किसने मारा है? मैं तो सोते समय दरवाजा बन्द करके ही सोया था।

(उठकर दरवाजे और खिड़कियों का निरीक्षण करते हैं)

(मन ही मन) दरवाजा तो पूर्णतया बन्द है। जालीदार खिड़कियों से कोई भी मानव आ ही नहीं सकता। पुन: वह कौन है, जिसने मुझे तमाचा मारा है? मेरे गाल में

अभी भी जलन हो रही है।

(कुछ देर सोचते हैं। पुन: सिसकियां भरकर होठों से बुदबुदाने लगते हैं। ऐसा लगता है, जैसे उनकी अन्तरात्मा उन्हें धिक्कार रही हो)

महाव जी भाई! अपने घर आये अक्षरातीत को तूने नहीं पहचाना। उनकी खण्डनी पर रूठकर तू यहाँ सोता रहा। तुझे किस बात का अभिमान है? दया के सागर, सर्वेश्वर स्वामी की अवहेलना का ही तुझे यह दण्ड मिला है। अब भी समय है। यदि तू अपना कल्याण चाहता है, तो उनके चरणों से लिपटकर अपनी भूल की क्षमा माँग।

(प्रात:काल का समय है। श्री जी अपने शयन कक्ष में सो रहे हैं। महावजी भाई के रोने की आवाज सुनकर वे उठ बैठते हैं)

श्री जी– अरे कौन? महावजी भाई! इस समय कैसे आना हुआ?

(महाव जी रोते हुए श्री जी के चरणों में गिर पड़ते हैं)

महाव जी– एक तरफ तो आप चाँटा मारकर पहचान देते हैं, ऊपर से पूछते हैं कि कैसे आए हो? आपकी यह विचित्र लीला है। प्राणेश्वर! आप साक्षात् अक्षरातीत हैं। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपको पहचान नहीं सका। मेरी इस भूल को क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए।

❖❖❖❖❖

अक्षरातीत का आवेश स्वरूप ही इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अपनी आत्माओं को जगा रहा है। ठट्ठानगर, मस्कत, अब्बासी बन्दर आदि सभी स्थानों में वे ही जागनी लीला कर रहे हैं। चाँटा पड़ने के बाद महाव जी भाई को उनकी पूरी पहचान हो जाती है।

मैं खण्डनी सुन के, होय गया बेजार।

मैं तो कच्चा साथ में, ना पहिचाना परवरदिगार।।

बी. सा. २६/२९

सुख देऊं सुख लेऊं, सुख में जगाऊं साथ।

इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

क. हि. २३/६८

श्री राज जी स्वयं कहते हैं कि मैं सुन्दरसाथ को आत्मिक सुख देता हूँ तथा सुखपूर्वक जगाता भी हूँ। मैंने अपने नाम तथा श्रृंगार की सम्पूर्ण शोभा श्री इन्द्रावती जी को दे रखी है, अर्थात् महामति जी का नाम (श्री राज, श्री प्राणनाथ, श्री जी) मेरा ही नाम है। मेरी तथा इस स्वरूप की शोभा में कोई भेद नहीं है।

एक सुख सुपन के, दूजे जागते ज्यों होए।

तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।

क. हि. २३/७५

एक सुख स्वप्न का होता है, जो मात्र आभास की तरह (काल्पनिक) होता है। दूसरा सुख जाग्रत अवस्था का होता है, जो यथार्थ में होता है। इसी प्रकार व्रज, रास, एवं श्री देवचन्द्र जी के तन से होने वाली आड़िका लीला आदि का सुख भी स्वप्न के समान है, तथा श्री प्राणनाथ जी के द्वारा होने वाली जागनी लीला का सुख जाग्रत अवस्था का वास्तविक सुख है।

(६)

(सूरत में सुन्दरसाथ के बीच में मन्त्रणा चल रही है)

एक सुन्दरसाथ– क्या कारण है कि आज श्री जी बहुत अधिक गम्भीर दिखाई दे रहे हैं?

दूसरा सुन्दरसाथ– बिहारी जी महाराज ने पत्र द्वारा श्री जी को सूचित किया है कि आपको सुन्दरसाथ के समूह से निष्कासित किया जाता है।

तीसरा सुन्दरसाथ– यह तो बहुत ही अनर्थ हो रहा है। श्री जी जिसे भी बिहारी जी के पास भेजते हैं, वह दु:खी होकर ही वापस आता है। बिहारी जी महाराज ने पत्नी सहित धारा भाई एवं रूपा बाई को पहले ही निकाल रखा है। अब हमारे आराध्य श्री प्राणनाथ जी के प्रति भी उनकी ऐसी ही भावना है। आखिर वे क्या चाहते हैं?

भीम भाई– यह समय भावुक या उत्तेजित होने का नहीं है। इस गम्भीर विषय पर स्पष्ट और त्वरित निर्णय लेने की आवश्यकता है कि हम किसको अपना धाम धनी मानें, श्री जी को या बिहारी जी को? हमें यह भी स्पष्ट करना है कि राज श्यामा जी (सद्गुरू महाराज) की बैठक गादीपति बिहारी जी में है या श्री मिहिरराज जी में।

सभी सुन्दरसाथ– आपके विचारों से हमारे अन्दर एक नवीन उत्साह का संचार हो रहा है। हम सभी सुन्दरसाथ इस विषय पर सहमत है कि आपका निर्णय सर्वमान्य होगा।

भीम भाई– परम सम्माननीय सुन्दरसाथ जी! श्री प्राणनाथ जी जहाँ आध्यात्मिक ज्ञान के सूर्य हैं, तो बिहारी जी की छवि उस काले बादल के समान है जो ज्ञान के प्रकाश को पूर्णतया समाप्त कर देने के लिये

उतावला है।

श्री मिहिरराज जी ने हब्शे में विरह की अग्नि में तड़पकर जहाँ युगल स्वरूप को अपने हृदय के सिंहासन पर विराजमान कर लिया है, वहीं बिहारी जी रुई की गादी पर बैठने मात्र से ही अपने को अक्षरातीत समझ बैठे हैं तथा रूढ़िवादिता, वंशवाद, एवं अन्ध–परम्पराओं की विषबेल को बढ़ा रहे हैं।

श्री जी के हृदय में जहाँ सुन्दरसाथ के लिये प्रेम का सागर उमड़ा करता है, वहीं बिहारी जी महाराज अपनी निष्ठुरता, क्रूरता, एवं संवेदनहीनता के लिये कुख्यात हैं। फूलबाई के धामगमन, रामजी भाई को दुत्कारने, तथा सपत्नीक धारा भाई एवं रूपा बाई के निष्कासन की घटनायें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि बिहारी जी महाराज का हृदय उस कठोर पत्थर का है, जिस पर प्रेम

के फूल स्वप्न में भी नहीं खिल सकते।

मेरी अन्तरात्मा की तो यही आवाज है कि हम श्री मिहिरराज जी के अन्दर विराजमान अक्षरातीत श्री राज जी को पहचानें तथा उन्हें अपना सर्वस्व मानकर अपना तन, मन, धन उनके चरणों में न्योछावर कर दें। सबका कल्याण इसी में निहित है।

सुन्दरसाथ– आपकी ये बातें शरदकालीन चन्द्रमा की शीतल किरणों के समान हमारे हृदय को आनन्दित कर रही हैं। किन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि श्री जी को राजी कर इसे क्रियान्वित कैसे किया जाये?

भीम भाई– इसका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर छोड़िये। चलिये, हम सभी सुन्दरसाथ चलकर श्री जी के चरणों में प्रार्थना करते हैं।

(श्री जी आसन पर बैठे हुए हैं। सभी सुन्दरसाथ वहाँ पहुँचकर शान्तिपूर्वक बैठ जाते हैं। भीम भाई खड़े होकर बोलना प्रारम्भ करते हैं)

भीम भाई– हे धाम धनी! हम सभी सुन्दरसाथ आपके चरणों में इस आशा के साथ आये हैं कि आप हमारी प्रार्थना को ठुकरायेंगे नहीं। हमारा यह निवेदन है कि सुन्दरसाथ की आत्मिक जाग्रति के लिये आप आगे आइए। इस महान कार्य में हम सभी सुन्दरसाथ का रोम–रोम आपके प्रति समर्पित है। हमें गादीपति बिहारी जी महाराज से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(श्री जी मुस्कराते हुए चुपचाप सुनते रहते हैं। भीमभाई पुन: बोलना प्रारम्भ करते हैं)

भीम भाई– हम सभी सुन्दरसाथ ने अपने विवेक चक्षुओं से देखकर अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर यह निर्णय लिया है कि आप ही हमारे अक्षरातीत हैं, प्राणवल्लभ हैं, प्राणप्रियतम हैं। हम आपको श्री बाई जी (तेजकुँवरि जी) के साथ सिंहासन पर बैठाकर आरती उतारना चाहते हैं। यदि आप हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार नहीं करते हैं, तो हमारा व्यथित हृदय टूट जायेगा।

(सुन्दरसाथ की ओर देखते हुए)

सुन्दरसाथ जी! आप क्या देख रहे हैं? शीघ्र आरती की तैयारी कीजिए।

(सिंहासन पर बैठाकर युगल स्वरूप (श्री जी व तेजकुँवरि जी) की आरती उतारी जाती है। श्री प्राणनाथ

प्यारे की जय के गगनभेदी जयकारों से सारा प्रांगण गूँज उठता है)

❖❖❖❖❖

धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर।

मेहेर ना देखे पिउ की, ऐसो हिरदे निपट अंधेर।।

प्र. हि. १४/३

धाम धनी ने इस जागनी ब्रह्माण्ड में दो तनों में लीला की है। पहली बार श्री देवचन्द्र जी के तन में तथा दूसरी बार श्री मिहिरराज जी के तन में। दूसरे तन में अपने प्राण प्रियतम की पहचान करके ही सुन्दरसाथ ने सूरत में उनकी आरती उतारी थी।

साथी भाई भीमजी, दीर्घ सु शोभा लीन्ह।

सिंहासन बैठारि के, नीराजन सजि कीन्ह।।

कर बाईजू राज के, आरति प्रेम कराई।

युग बैठाई आपुन करी, कल्मश दिए हराई।।

वृत्तान्त मुक्तावली ४९/३०,३१

परमधाम के रंगमहल में केवल दो शक्तियों (चिद्धन तथा आनन्द) की लीला होती है, किन्तु श्री महामति जी के धाम हृदय में धनी की पाँचों शक्तियाँ (जोश, श्यामाजी, अक्षर ब्रह्म, आवेश, तथा जाग्रत बुद्धि) लीला कर रही हैं। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी के इस स्वरूप की शोभा परमधाम के नूरमयी मूल स्वरूप से भी अधिक है।

आप पेहचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।

बड़ी बड़ाई दई आप थें, लई इन्द्रावती कंठ लगाए जी।।

प्र. हि. ३६/७

अधिक क्या कहना? इस जागनी ब्रह्माण्ड में अब श्री

प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी अक्षरातीत की शोभा नहीं ले सकता।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेदी पाक पूरन।

खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैंयन।।

सनंध ४२/१६

व्रज एवं रास में ३६ हजार सखियों (१२००० ब्रह्मसृष्टि व २४००० ईश्वरी सृष्टि) के साथ लीला हुई थी। इसी प्रकार इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री राज जी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में उन्ही ३६००० सखियों के साथ जागनी लीला कर रहे हैं।

मूल स्वरूप के आवेश वाले श्री प्राणनाथ जी के इस स्वरूप की महिमा तो अनन्त है ही, सातवें दिन योगमाया की पहली बहिश्त में सिंहासन पर विराजमान

होने वाले उस स्वरूप की अलौकिक महिमा होगी, जिसमें मात्र श्री मिहिरराज जी का जीव धनी के जोश के साथ होगा। उस स्वरूप में श्री इन्द्रावती जी की आत्मा तथा श्री राज जी का आवेश नहीं होगा। फिर भी शेष आठों बहिश्तों सहित ब्रह्माण्ड के सभी जीव उसी स्वरूप को अक्षरातीत मानकर रिझायेंगे।

श्री धनी जी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक।

किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूं को ना रह्यो।।

प्र. हि. ३७/११०

सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और।

पिया के विरह सों निरमल किए, पीछे अखण्ड सुख सबों को दिए।।

प्र. हि. ३७/११२

मेरे गुन अंग खड़े होसी, अरचासी आकार।

बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।।

क. हि. २३/१०४

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।

साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।।

सनंध ३६/१८

इस जागनी लीला में जो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को नहीं पहचानेंगे, योगमाया के न्याय के दिन उन्हें पश्चाताप के आँसुओं का सामना करना पड़ेगा–

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख।

ऐसे मौले मेहेबूब सों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।

सनंध २६/८

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसलमीन।

हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।

सनंध २६/२४

सनंध २६/२४ के इस कथन में "रसूल" शब्द का तात्पर्य श्री प्राणनाथ जी से ही है, अरब वाले स्वरूप से नहीं।

(७)

(श्री लालदास जी कुछ खिन्न मन से विचारमग्न हैं। वे टहलते–टहलते बुदबुदाने लगते हैं)

लालदास जी– सम्पूर्ण धन तो समाप्त हो ही गया है। अब धाम धनी के चरणों में जाने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं है। मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक मैं नवतनपुरी जाकर धाम धनी बिहारी जी महाराज का दर्शन नहीं करूँगा, तब तक मैं अन्न ग्रहण नहीं करूँगा, मात्र फलों का ही सेवन करूँगा।

(श्री लालदास जी वहाँ से चल देते हैं। मार्ग में ही सूरत में श्री जी से भेंट हो जाती है। लालदास जी श्री जी के चरणों में प्रणाम करते हैं)

श्री प्राणनाथ जी– लालदास जी! आपको देखकर मुझे

बहुत ही प्रसन्नता हुई है। जागनी कार्य की विशेष सेवाओं के लिये ही आपको यहाँ बुलाया गया है। सब सुन्दरसाथ भोजन कर रहे हैं। आप भी भोजन ग्रहण करें।

लालदास जी– मैंने प्रण किया है कि जब तक धाम धनी श्री बिहारी जी के दर्शन नहीं करूँगा, तब तक अन्न ग्रहण नहीं करूँगा।

श्री जी– लालदास जी! आपको इस विषय में जरा भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आप निश्चिन्त होकर अन्न ग्रहण कीजिए क्योंकि आप धाम धनी (श्री प्राणनाथ जी) के चरणों में पहुँच चुके हैं। आपका प्रण मेरे पास आने से पूरा हो गया है। आपको अब नवतनपुरी जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

❖❖❖❖❖

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।

सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।

किरंतन ५२/२५

विष्णु भगवान के द्वारा धारण किये गये अवतारों के बीच में अक्षरातीत की लीला छिपी रह गयी थी। अब वही श्री राज जी श्री मिहिरराज जी के तन में विराजमान होकर ब्रह्मवाणी द्वारा अपनी पहचान करा रहे हैं।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।

लौकिक नाम दोउ मेट के, करसी नयो ठाट।।

किरंतन ५२/२६

अब श्री राज जी ब्रह्मवाणी द्वारा अपनी पहचान को चारों ओर फैलाकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अखण्ड सुख देंगे। वे अपने दोनों लौकिक नामों (श्री कृष्ण जी तथा श्री

देवचन्द्र जी) को मिटाकर अपनी नयी शोभा (श्री प्राणनाथ जी, श्री जी) के साथ संसार में प्रसिद्ध (जाहिर) होंगे।

ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।

ए प्रगटया पूरण पारब्रह्म, महामति तणों आधार।।

किरंतन ५१/१०

व्रज की यह लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड (सबलिक के कारण) में अखण्ड हो चुकी है। भविष्य में (जागनी लीला में) इस लीला के रहस्यों का विस्तार होगा। इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री महामति जी के भी प्रियतम पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द (श्री प्राणनाथ, श्री जी) प्रकट हुए हैं।

दृष्टव्य– "महामति" और श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अन्तर है। "महामति" श्री इन्द्रावती जी की शोभा का

नाम है।

"महामति खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत को" के इस कथन से स्पष्ट है कि श्री महामति जी (श्री इन्द्रावती जी) के भी प्रियतम का नाम श्री राज (श्री प्राणनाथ) है।

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।

सो सत बानी सबों की करी, अब आए करो दीदार।।

किरंतन ५३/७

सभी भविष्यवक्ता पुकार–पुकार कर यह बात कह रहे थे कि अट्ठाइसवें कलियुग में सच्चिदानन्द परब्रह्म का प्रकटन होगा। धाम धनी ने उनकी भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध कर दिया है और स्वयं आ गये हैं। हे संसार के लोगों! आप सभी आकर उस पूर्ण ब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) का दर्शन करें।

(८)

(सिद्धपुर में श्री प्राणनाथ जी सुन्दरसाथ सहित ठहरे हुए हैं, जाने की तैयारी हो रही है। गोवर्धन दास जी भगवान दास पण्डे को एक मोहर भेंट में देते हैं)

भगवान दास– आपका कल्याण हो। कृपया एक और मोहर दे दीजिए।

गोवर्धन जी– अरे भाई! देने को तो मैं दस मोहरें दे सकता हूँ, किन्तु यह तो नश्वर धन है। आपने जिन श्री जी की दिनों तक श्रद्धापूर्वक सेवा की है, उनसे अखण्ड का धन माँगिए और उनके स्वरूप की पहचान कीजिए।

(भगवान दास जी श्री प्राणनाथ जी के चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं)

भगवान दास– हे श्री जी! आप मेरी आत्मा को जाग्रत

करने की कृपा कीजिए।

श्री जी– भगवान दास! अब चलने के समय मैं तुम्हें कितना बताऊँ? तुम संक्षेप में इसी बात का चिन्तन करते रहना कि हम उस परमधाम से आये हैं, जहाँ यमुना जी का नूरी जल प्रवाहित हो रहा है। उसके किनारे सात घाटों की शोभा आयी है तथा यमुना जी हौज कोशर ताल में गिरती हैं। परमधाम में ही अक्षर धाम है, जहाँ अक्षर ब्रह्म का निवास है। उनकी लीला बेहद में होती है। माया का खेल देखने के लिये इश्क–रब्द (प्रेम विवाद) करके हम सभी आत्माओं ने व्रज–रास में लीला की है। अब इस जागनी ब्रह्माण्ड में जाग्रत होकर पुन: हम निजधाम में जायेंगी।

(भगवान दास अपने घर के बाहर गम्भीर चिन्तन में टहल रहे हैं। उनके मित्र केशव भट्ट का आगमन होता

है। अभिवादन के पश्चात् दोनों में वार्ता प्रारम्भ हो जाती है)

भगवान दास– केशव! अब से छः माह पूर्व एक क्षत्रिय यहाँ आया था। उसके साथ उसके लगभग ५०० अनुयायी थे। उस क्षत्रिय ने मुझे आध्यात्मिक ज्ञान की जो बातें बतायीं, वैसी बातें न तो मैंने कहीं पर सुनी हैं और न कभी पढ़ी ही हैं। वे बातें इतनी मधुर और रहस्यमयी हैं कि मैं मन ही मन उनका चिन्तन करता रहता हूँ, किन्तु अब तक मैंने किसी को भी बताया नहीं है।

केशव– जरा सुनाओ तो।

भगवान दास– हद–बेहद से परे वह परमधाम है, जहाँ के कण–कण में प्रेम और आनन्द हैं। परब्रह्म से माया का

खेल माँगकर परमधाम की आत्मायें व्रज–रास में आयी थीं और अब पुन: इस जागनी ब्रह्माण्ड में आयी हैं.....।

केशव– रे पागल! मैं तुम्हारे दुर्भाग्य को क्या कहूँ? तू जीवन भर पण्डा ही बना रहा। जिनको तू एक क्षत्रिय समझे बैठा है, वह तो साक्षात् पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप हैं। अब मैं उनकी खोज में जा रहा हूँ। क्या तू इतना भी बता सकता है कि वे किस रास्ते से कहाँ गये?

भगवान दास– मैंने तो इस विषय में ध्यान ही नहीं दिया था।

केशव दास– ठीक है, मैं अब धाम धनी की खोज में चलता हूँ।

❖❖❖❖❖

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को न पहचानने वाले हतभाग्य तो हैं ही, किन्तु जो जान–बूझकर उनकी महिमा को ढकने या खण्डित करने का प्रयास करते हैं, उनके ऊपर कितना पाप (दोष) लगता है, यह बीतक साहिब एवं वृतान्त मुक्तावली के इन कथनों से जाना जा सकता है–

यह तो अक्षरातीत था, तुम न करी पहिचान।

अब मैं उतहीं जात हों, मुझे आया ईमान।।

बी० सा० ३३/२८

वाको क्षत्री जिन कहो, पुरूष अक्षरातीत।

शब्द नहीं ये और के, करी चीन्हि परतीत।।

कहौं कहा मैं तोहि अब, रे मूर्खहि भगवान।

पूरन ब्रह्म लख्यो नहिं, करि पूरन पहिचान।।

वृ० मु० ५०/२२,२३

कयामतनामा ग्रन्थ के शब्दों में–

इन मोती का मोल कहयो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए।

सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे।।

बड़ा कयामतनामा ८/५५

अर्थात् अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की महिमा अनन्त है। शब्दों में इसका वर्णन हो पाना कदापि सम्भव नहीं है। किसी के कानों में भी इतनी शक्ति नहीं है कि वह पूर्ण रूप से सुनने में सक्षम हो सके। श्री जी की अनन्त महिमा को सीमाबद्ध करने का प्रयास करने वाला प्रायश्चित (दोजख) की अग्नि में जलेगा तथा उसे छोटे रूप में सुनने वाला भी प्रायश्चित के दु:ख से जलेगा।

आगूं नव सदीय के, कहया होसी रूहों मिलाप।

बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप।।

बड़ा कयामतनामा ९/४

कुरआन में कहा गया है कि नवीं सदी के बाद ब्रह्मसृष्टियों का मिलाप होगा। इस बड़े मेले में स्वयं परब्रह्म (श्री जी) आकर सबको दर्शन देंगे।

उल्लू न चाहे उग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।

ए सुन वाका जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।।

बड़ा कयामतनामा ७/२०

चमगादड़ और उल्लू पक्षी को मात्र रात्रि के समय ही दिखायी देता है, दिन में नहीं। ये दोनों पक्षी कभी भी नहीं चाहते कि सूर्य निकले, क्योंकि सूर्य के प्रकाश में उन्हें दिखायी ही नहीं पड़ता। तारतम वाणी से अक्षरातीत श्री

प्राणनाथ जी (श्री जी) के प्रकटन की बात सुनकर भी जो ईमान (पूर्ण श्रद्धा) नहीं रखते, वे चमगादड़ और उल्लू के समान अन्धे ही कहे गये हैं।

(९)

(दिल्ली में लक्ष्मी दास जी अपने कक्ष में बैठे हुए हैं। अचानक उन्हें अपने सामने ज्योतिर्मय आभामण्डल के बीच में श्री राज जी का स्वरूप दिखायी पड़ता है)

लक्ष्मी दास– (मन ही मन) यह मैं क्या देख रहा हूँ? स्वयं श्री राज जी?

श्री राज जी– लक्ष्मी दास! आश्चर्य न करो, मैं तो स्वयं ही तुम्हें दर्शन देने आया हूँ।

लक्ष्मी दास– (खुशी से फूले न समाते हुए) मुझे तो स्वप्न में भी यह आभास नहीं था कि मुझे ऐसा भी सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।

श्री राज जी– मैं इस प्रकार का दर्शन तुम्हें कई दिन दूँगा। तुम्हारे घर भोजन भी करूँगा और तुम्हारे ही तन

से आज के आठवें दिन औरंगज़ेब की आत्मा को जाग्रत भी करूँगा।

लक्ष्मी दास– (प्रसन्नता की अधिकता में) धाम धनी! आपकी उस महान कृपा का बोझ मेरे जैसा नादान व्यक्ति कैसे झेल सकता है? अब मेरी प्रार्थना है कि आप भोजन ग्रहण करके मुझे कृतार्थ करें।

(श्री राज जी को प्रेमपूर्वक भोजन कराते हैं)

(९अ)

(श्री प्राणनाथ जी सुन्दरसाथ के बीच में बैठे हुए हैं। लक्ष्मीदास जी प्रवेश करते हैं और श्री जी के चरणों में प्रणाम करके बैठ जाते हैं। उनके मुखमण्डल पर अपार प्रसन्नता दिखायी पड़ रही है)

लक्ष्मी दास– हे धाम धनी! मेरे घर पर आज बहुत ही विचित्र घटना हुई है, जिसे सुनाने की मैं आज्ञा चाहता हूँ।

श्री जी– सुनाइये।

लक्ष्मी दास– आज जब मैं अपने कक्ष में बैठा हुआ था, तो श्री राज जी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिया तथा यह भी कहा कि आज से आठवें दिन मैं औरंगज़ेब की आत्मा को तुम्हारे द्वारा जाग्रत कराऊँगा। उन्होंने आज हमारे घर भोजन भी किया।

श्री जी– (मुस्कराते हुए) यह तो बहुत ही प्रसन्नता की बात है। श्री राज जी की कृपा किसी भी ब्रह्मसृष्टि के ऊपर हो सकती है। आपके ऊपर जैसी कृपा हुई है, वैसी कृपा को पाने वाला सुन्दरसाथ या तो मेरे आगे चले

या मेरे बराबर बैठे। (सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए) सुन्दरसाथ जी! लक्ष्मीदास जी के लिये मेरी बराबरी में बैठने की व्यवस्था कीजिए।

लक्ष्मी दास– मैं आपके आगे तो नहीं चल सकता, किन्तु आपकी बराबरी में अवश्य बैठ सकता हूँ। मुझे विश्वास है कि धाम धनी मेरे तन से ही औरगंज़ेब को जाग्रत करेंगे।

(यह कहकर आसन पर बैठ जाते हैं। थोड़ी देर में कुछ सुन्दरसाथ उनको प्रणाम करने लगते हैं)

श्याम भाई– धाम के धनी लक्ष्मी दास जी की जय हो! प्रणाम धाम धनी।

भीम भाई– (चरणों में झुककर प्रणाम करते हुए) आपके चरणों का दर्शन प्राप्त करके हम धन्य–धन्य हो

गये हैं। आप तो साक्षात् श्री राज जी ही हैं।

(लक्ष्मीदास जी लज्जित होकर शिर नीचा कर लेते हैं)

(९ब)

(कुछ सुन्दरसाथ आपस में हँसी के स्वरों में बातें कर रहे हैं)

एक सुन्दरसाथ– आज तो श्री राज जी के वचन का आठवाँ दिन है।

दूसरा– लक्ष्मीदास जी आ ही रहे होंगे। देखते हैं, वे औरंगज़ेब के साथ आते हैं या अकेले?

(थोड़ी देर के बाद लक्ष्मीदास जी आते हुए दिखायी पड़ते हैं। मुस्कराते हुए श्याम भाई आगे जाकर तीव्र स्वरों में कहते हैं)

श्याम भाई– प्रणाम धाम धनी! आज आप अकेले ही कैसे दिखायी दे रहे हैं?

भीम भाई– आपके साथ औरंगज़ेब को आते हुए देखने के लिये हम लोग अधीर हुए बैठे हैं।

(कुम्हलाए हुए मुख के साथ लज्जित अवस्था में लक्ष्मी दास जी खड़े हो जाते हैं)

लक्ष्मी दास– भाई मैं क्या करूँ? मैं अपनी भूल से बहुत ही लज्जित हूँ। आज श्री राज जी मेरे सामने प्रकट हुए। मैंने जब उन्हें वचनों की याद दिलायी, तो वे तुरन्त अन्तर्धान हो गये। अब तो प्रायश्चित की अग्नि में हाथ मलते रहने के अतिरिक्त अन्य कोई भी चारा नहीं है। आड़िका लीला के चमत्कार से प्रभावित होकर मैं स्वयं को श्री जी के समकक्ष समझने लगा था। मेरे गुनाह का

शायद ही कोई प्रायश्चित हो।

(यह कहते हुए उनकी आँखों से आँसुओं की बूँदे ढुलक पड़ती हैं)

❖❖❖❖❖

इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री महामति जी को ही एकमात्र अक्षरातीत कहलाने की शोभा है। "कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेहेंदी पाक पूरन" (सनंध ४२/१६) के कथन से यही विदित होता है। कलस हिन्दुस्तानी की वाणी तो डिण्डिम घोष के साथ प्राणनाथ जी की महिमा को चित्रित करती है–

इन्द्रावती के मैं अंगे संगे, इन्द्रावती मेरा अंग।

जो अंग सौंपे इन्द्रावती को, ताए प्रेमें खेलाउं रंग।।

सुख देउं सुख लेउं, सुख में जगाउं साथ।

इन्द्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

एक सुख सुपन के, दूजे जागते ज्यों होए।

तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।

क० हि० २३/६६,६८,७५

सनंध ३०/४३ में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि श्री प्राणनाथ जी की महिमा के बराबर अब तक किसी भी ब्रह्माण्ड में न तो कोई हुआ है, न है, और न होगा–

तारीफ महंमद मेंहेदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्माण्डों नाहें।।

ब्रह्मवाणी में कहे हुए इन वचनों को सत्य सिद्ध करने के लिये ही श्री राज जी ने लक्ष्मीदास जी को दिए हुए अपने

वचनों को मिथ्या घोषित कर दिया।

(१०)

(हरिद्वार में महाकुम्भ का मनोरम दृश्य। लाखों लोगों की भीड़ गंगा में स्नान करके पुण्य प्राप्त करने की आशा में एकत्रित है। एक विशाल तम्बू के अन्दर हजारों लोग बैठे हुए हैं। श्री जी वैष्णव, दशनामी, षट् दर्शन, एवं अनेक पन्थों के आचार्यों के साथ मंच पर विराजमान हैं। श्री प्राणनाथ जी के प्रश्नों से निरूत्तर हुए सभी आचार्यों के चेहरे पर उदासी और लज्जा की झलक स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही है। अब सभी आचार्यों की ओर से प्रश्नों की झड़ी लगा दी जाती है)

आचार्यगण– आपके साथ जो आपके अनुयायी आये हैं, उनका परिचय क्या है?

श्री जी– इसे जानने के लिये आप हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व का अवलोकन करें, तो आपको विदित हो जायेगा कि मेरे साथ आये हुए सभी लोग परमधाम के वे ब्रह्ममुनि हैं, जो इस अट्ठाइसवें कलियुग में प्रकट हुए हैं।

: आप सद्गुरु किसको मानते हैं?

: आनन्दमय परब्रह्म को।

: सूत्र क्या है?

: अक्षर ब्रह्म।

: शिखा क्या है?

: अक्षरब्रह्म से भी परे अक्षरातीत के स्वरूप की अलौकिक शोभा ही शिखा है।

: देवी क्या है?

: ब्रह्मविद्या ही देवी है।

: किसका जप करते हैं?

: परब्रह्म के युगल स्वरूप का।

: कौन सा मन्त्र मानते हैं?

: तारतम मन्त्र को।

: कितने पक्ष हैं?

: पाताल से लेकर परमधाम तक कुल १०८ पक्ष हैं।

: सुख विलास का स्थान कहाँ है?

: नित्य वृन्दावन।

: किस वेद को मानते हैं?

: स्वसं वेद (तारतम ज्ञान) को।

: आपका धाम क्या है?

: दिव्य ब्रह्मपुर (परमधाम)।

: आपके सम्प्रदाय का क्या नाम है?

: श्री निजानन्द सम्प्रदाय।

: इसके प्रवर्तक कौन हैं?

: परब्रह्म के आनन्द अंग श्री निजानन्द स्वामी।

(सभा में सन्नाटा छा जाता है। सभी आचार्यजन अपने उदास चेहरों के साथ मौन धारण कर लेते हैं)

श्री जी– और कोई प्रश्न?

आचार्यगण– नहीं, हमें अपने सभी प्रश्नों का उत्तर मिल गया है? हम यह जानना चाहते हैं कि कहीं आप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप तो नही हैं?

श्री जी– (मुस्कराते हुए) ऐसा आप किस आधार पर सोच रहे हैं?

आचार्यगण– आपने हमसे केवल एक ही प्रश्न किया था कि महाप्रलय के पश्चात् जीव तथा ब्रह्म का स्वरूप कहाँ रहता है? हम सभी आचार्य मिलकर भी आपके इस एक प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके , किन्तु आपने अकेले ही हमारे सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया। इस प्रकार का अलौकिक कार्य श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं कर सकता।

इस समय वि.सं. १७३५ तथा शक संवत् १६०० पूर्ण हो चुका है। धर्मग्रन्थों की साक्षियों के अनुसार – "श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप" के प्रकट होने का यही समय है।

श्री जी– इसके आगे आप क्या कहना चाहते हैं?

आचार्यगण– हम सभी आचार्यों के हृदय में यही आवाज उठ रही है कि आप ही "श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार" हैं। यदि आज रात्रि को धूमकेतु का तारा दिखायी दिया, तो हमारे मन में नाम मात्र के लिये भी संशय नहीं रह जायेगा।

(कुछ भी न बोलते हुए श्री जी मन्द–मन्द मुस्कराते रहते हैं। अगले दिन प्रात:काल आचार्यों की सभा लगती है)

एक आचार्य– आज तो मैंने धूमकेतु तारा देखा है।

दूसरा आचार्य– मैं तो इनके अलौकिक प्रभामण्डल को देखकर ही समझ गया था कि ये ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप हैं।

तीसरा आचार्य– जरा इनके ज्ञान के तेज को तो देखो! हम सभी मिलकर भी इनके किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके।

चौथा आचार्य– मेरे मन में तो यही आ रहा है कि हम सभी को मिलकर श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के प्रकट होने की घोषणा करनी चाहिए। इनकी आरती उतारकर इनके नाम का संवत् भी चलाना उचित होगा।

पाँचवां आचार्य– धर्मशास्त्रों में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी को परब्रह्म का ही स्वरूप कहा गया है। यह तो हमारा परम सौभाग्य है कि आज हमें अपने नेत्रों से इनके प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

छठा आचार्य– अब श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी की

आरती में देर नहीं करनी चाहिए।

(धूमधाम के साथ श्री जी की आरती उतारी जाती है तथा "श्री प्राणनाथ प्यारे" के जयघोष के साथ विजय पताका फहरायी जाती है)

❖❖❖❖❖

कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।

उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।।

किरंतन ५७/१

अनन्त कृपा के सागर श्री राजश्यामा जी इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट हुए हैं, जिससे सारे संसार में सुख फैल गया है।

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्मसृष्ट सिरदार।

ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।।

किरंतन ५७/२

हे संसार के लोगों! हम सबके (सुन्दरसाथ के) बीच ब्रह्मसृष्टियों के प्रियतम तथा ईश्वरी सृष्टि एवं जीव सृष्टि के स्वामी पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी प्रकट हो गये हैं, इसलिये आप सभी आकर उनका प्रत्यक्ष दर्शन कीजिए।

प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन।

महामत इन प्रकास थें, अखण्ड किए सब जन।।

किरंतन ५७/१०

श्री महामति जी कहते हैं कि अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी एवं ब्रह्मसृष्टियों के इस संसार में प्रकट होने से अखण्ड परमधाम का ज्ञान यहाँ आ गया है। इसी अलौकिक ज्ञान से ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड

मुक्ति मिलेगी।

चेतो सबे सतवादियो, सुनियो सो सतगुरू मुख बान।

धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रगटिया प्रवान।।

किरंतन ५५/२

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि हे सभी धर्मों के आचार्यों! आप सभी सावधान होकर सद्गुरु स्वरूप परब्रह्म की वाणी को सुनिए। इस समय स्वयं परब्रह्म ही श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के स्वरूप में प्रकट हुए हैं, जो मेरे तो धनी हैं और शेष विश्व के प्रभु हैं।

आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप।

आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत।।

किरंतन ५५/३

परब्रह्म के आने की भविष्यवाणियाँ करने वाले अब सावचेत हो गये हैं। तारतम ज्ञान न होने से परब्रह्म को आज दिन तक कोई भी स्पष्ट रूप से जानता नहीं था। वही अक्षरातीत अब सुन्दरसाथ में प्रकट हो गये हैं, जिनसे परमधाम का अलौकिक ज्ञान फैल रहा है।

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।

सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।।

किरंतन ६५/१९

वेद–कतेब में अक्षरातीत परब्रह्म की संक्षेप में पहचान दी गयी है। अब वही परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर अपने सम्पूर्ण गुह्य भेदों (पूर्ण पहचान) को तारतम ज्ञान द्वारा प्रकाशित (जाहिर) कर रहे हैं।

बीतक के इन कथनों से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित है

कि हरिद्वार के महाकुम्भ में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में "श्री राज" ही आये थे–

चार वर्ण चार आश्रम, सबे भए एक ठौर।

सबने देख श्री राज को, कीनी दिल सक और।।

तब कहे वचन श्री राज ने, तुम प्राचीन पुरातम।

सो कहो हमें समझाय के, अपनो इष्ट जो धरम।।

सुन पद्धत श्री राज ने, किये प्रस्न जो एह।

को पंथ अगाध जो, तुम धन्य रामानुज तेह।।

बीतक ३५/३३,३५,४६

श्री प्राणनाथ, श्री राज, और श्री जी शब्द एकार्थवाची हैं। बीतक साहिब के शब्दों में–

तब सब मत मारग ने मिलके, कही श्री जी सों विख्यात।

अपने मत हम सब कहे, अब आप कहो साख्यात्।।

बी० सा० ३७/५८

(११)

(दिल्ली में काजी शेख इस्लाम के निवास पर १२ सुन्दरसाथ बैठे हुए हैं। दोनों पक्षों में इस्लाम धर्म के गहन रहस्यों के सम्बन्ध में वार्ता चल रही है)

काजी– आप लोग जो बातें कह रहे हैं, क्या उनकी साक्षी में कोई पुस्तक आपके पास है?

लालदास जी– हाँ है। यह लीजिए। (कहते हुए काजी के हाथों में हदीस की एक पुस्तक पकड़ा देते हैं)

काजी– (थोड़ा पढ़ने के बाद) कहीं यह किताब आप लोगों की बनाई हुई तो नहीं है?

कई सुन्दरसाथ– (निर्भीकतापूर्वक) हम लोग स्वप्न में भी इस प्रकार की जालसाजी नहीं कर सकते। ऐसी निराधार बातें आपको नहीं कहनी चाहिए। यह किताब

उर्दू बाजार से खरीद कर लायी गयी है। आप यदि चाहें, तो इसकी सत्यता की जाँच करवा सकते हैं।

काजी– आप अभी से ही कियामत के आने की बात क्यों करते हैं? क्या आपका यह कथन कुरआन के अनुकूल है?

लालदास जी– कुरआन के तीसवें पारे में यह वर्णित है कि दसवीं सदी में ईसा रूह अल्ला आयेंगे। ग्यारहवीं सदी में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब का प्रकटन होगा। वही समय कियामत का होगा। बारहवीं सदी में जाग्रत करने वाले ज्ञान के प्रकट होने से अज्ञानता का अन्धकार समाप्त हो जायेगा अर्थात् फज्र की लीला होगी। तेरहवीं सदी में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति पाने की बख्शीश (कृपा) प्राप्त हो जायेगी। कुरआन के इन रहस्यों को हमारे हादी इमाम मुहम्मद महदी (श्री

प्राणनाथ जी) ने ही बताया है।

(काजी के सभी सहयोगी अधिकारी इधर–उधर बगले झाँकने लगते हैं)

एक दरबारी– आप लोगों को जब अल्लाह, रसूल, और कुरआन पर इतना ईमान है, तो आप नमाज क्यों नहीं पढ़ते?

सुन्दरसाथ– इस फानी दुनियाँ से हमें किसी भी प्रकार का मोह नहीं है। हमारे उठने–बैठने, बोलने और चलने आदि क्रियाओं में भी अल्लाह तआला का ध्यान बना रहता है, इसलिये शरियत की नमाज अदा करने की हमें कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

दूसरा दरबारी पहले से– इनके कथनों का जवाब तो दो। मुझे लगता है कि तुम्हारे पास इनके सवालों का कोई

भी जवाब नहीं है।

शेख इस्लाम– आपकी अकाट्य बातों से हमें पूर्णतया यकीन हो गया है कि आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज़्ज़मां आ गये हैं, आ गये हैं, आ गये हैं.....। किन्तु जब तक वे पूर्ण रूप से ज़ाहिर नहीं हो जाते, तब तक हम इस बात को स्वीकार ही नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा कर लेने पर हमारी शरा–तोरा की हुकूमत नष्ट हो जायेगी। आप लोगों से भी हमारा यही कहना है कि इस बात को आप ज़ाहिर न करें।

❖❖❖❖❖

करी अनेकों बन्दगी, इस्क लिया कई जन।

तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन।।

सनंध ३३/४

परब्रह्म को पाने के लिये अनेक भक्तों ने बन्दगी की तथा बहुत से लोगों ने प्रेम का मार्ग अपनाया, किन्तु किसी को भी उनकी जरा सी भी झलक नहीं मिल सकी। अब वे ही अक्षरातीत परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबके लिये आ गये हैं।

रसूलें इत आए के, पेहेले किया पुकार।

आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार।।

सनंध ३३/१५

मुहम्मद साहिब ने ११०० वर्ष पहले ही यह बात पुकार–पुकार कर कही थी कि जब कियामत के समय परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) आयें, तो उस समय उनकी पहचान करने के लिये सावधान रहना।

हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान।

ए छोड़ और जो ढूंढहीं, तिन दिल आंख न कान।।

सनंध २२/११

मुहम्मद साहिब कुरआन के द्वारा सभी को यह स्पष्ट पहचान करा रहे हैं कि श्री प्राणनाथ जी ही पूर्ण ब्रह्म हैं। इनको छोड़कर जो किसी अन्य को ढूँढते हैं, उनके दिल, आँख, और कान नहीं हैं, अर्थात् उनके अन्दर अपने आत्मिक चक्षुओं से परब्रह्म को देखने का न तो प्रेम है और न उन्होंने ब्रह्मज्ञान ही सुना है।

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन।

हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।

सनंध २६/२४

इस संसार में जो जीव श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की

पहचान नहीं कर पायेंगे, वे न्याय के दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में उन्हें सिंहासन पर बैठा हुआ देखकर बहुत अधिक पश्चाताप करेंगे कि हाय! हाय! प्रियतम परब्रह्म (श्री जी) हमारी दुनियाँ में आये थे, लेकिन हम अन्धों ने उनकी पहचान नहीं की।

और माएने सो ढूंढहीं, ठौर न जाको दिल।

रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहां बेअकल।।

सनंध २२/१३

जिनके दिल में ईमान नहीं है, वे ही इधर–उधर ढूँढते हैं। जब मुहम्मद साहब ने यह वायदा किया है कि मैं कियामत के समय (ग्यारहवीं सदी में) साक्षात् परब्रह्म (श्री जी) से मिलाऊँगा। अब उनके प्रकट हो जाने पर इधर–उधर ढूँढने वाले बुद्धिहीन हैं।

एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ने ही हरुफे मुक्तेआत के भेदों को खोला है तथा सबके न्यायाधीश के रूप में न्याय किया है। इस प्रकार इस जागनी ब्रह्माण्ड में एकमात्र वे ही अक्षरातीत के स्वरूप हैं।

अलिफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद ना किन समझाए।

सो छीले गए कुरान से, ए भेद जाने एक खुदाए।।

किरंतन ७१/१७

लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखिर।

जरे जरे हिसाब लेय के, पोहोंचावे किसमत कर।।

किरंतन ७३/३५

काजी होए के बैठसी, हिसाब लेसी सबन।

पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन।।

किरंतन ६६/१९

जिस अक्षरातीत ने मेयराज में मुहम्मद साहब से कियामत के समय में आने का वायदा किया था, वे ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आकर सभी को जगा रहे हैं।

सोई साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सो कौल।

भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल।।

किरंतन ६६/१८

एकमात्र परब्रह्म का स्वरूप ही अक्षरातीत की पहचान दे सकता है। यह शोभा केवल श्री प्राणनाथ जी की है। इस प्रकार यही स्वरूप हमारा आराध्य है–

खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए।

करे बयान फुरमावे हुकम, लायक पूजने के सोए।। कि. ७१/१६

(१२)

स्थान– कामा पहाड़ी।

(श्री जी एकान्त में बैठे हुए हैं। कान्ह जी भाई उदास चेहरे के साथ उनके पास धीरे–धीरे पहुँचकर चरणों में प्रणाम करते हैं और शिर झुकाकर चुपचाप खड़े हो जाते हैं)

श्री जी– (गम्भीर स्वर में) कान्ह जी भाई! दिल्ली के सुन्दरसाथ का हाल तो सुनाओ।

(कान्ह जी भाई चुप रहते हैं)

श्री जी– अरे भाई! बोलो तो सही। बोलते क्यों नहीं?

कान्हजी भाई– (सिसकते हुए) धाम धनी! उन बारहों सुन्दरसाथ को कोतवाल के हवाले कर दिया गया था..... (कहते हुए चुप हो जाते हैं)

श्री जी– आगे बताओ।

कान्ह जी भाई– (जोर से रोते हुए) कोतवाल उन्हें पूरी रात.....हण्टर से यातना देता रहा। सबके शरीर पर चारों ओर गहरे नीले निशान बन गये हैं।

श्री जी– (तमतमाते हुए) क्या कहा, मेरे सुन्दरसाथ को इस प्रकार सताया गया?

कान्ह जी– (आँसुओं से भीगे हुए चेहरे को उठाकर) हाँ धाम धनी!

(श्री जी का मुखमण्डल अँगारे की तरह लाल दिखायी देने लगता है)

श्री जी– ज.....ब.....रा.....ई.....ल! तू अभी तक क्या कर रहा है? मिटा दे इस कायनात को।

(धीमे स्वरों में अति मधुर आवाज आती है) नहीं

महामति! अभी तो खेल पूरा ही नहीं हुआ। ब्रह्मसृष्टियों की अभी खेल देखने की इच्छा बाकी है। इसलिये अभी महाप्रलय करना उचित नहीं है।

(थोड़ी देर रूककर) मैंने अपने लाडलों को अपना सन्देश देकर भिजवाया था। उन्हें यातना देना मुझे यातना देने के समान है। अब इन जाहिरी मुसलमानों को विनाश से कोई भी नहीं बचा सकता, कोई नहीं।

❖❖❖❖❖

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।

ना तो लेते अन्दर, केती बेर हैं हम।। सनंध ३८/६६

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी! माया के इस खेल को देखने की अभी आपके मन में इच्छा है। यही कारण है कि मैंने इस खेल को बढ़ा दिया है, अन्यथा इस

जगत् का प्रलय करने में मुझे जरा सी भी देर नहीं लगेगी।

श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप साक्षात् परब्रह्म का ही स्वरूप है। उन्हीं के आदेश से इस ब्रह्माण्ड का प्रलय होना है। सत्ता के मद में चूर औरंगज़ेब को तख्ते–ताउस से गिरा देना भी उन्हीं की लीला का अंग है–

राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए।

तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए।।

सिनगार २९/९४

श्री प्राणनाथ जी के लिये चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड का प्रलय तो एक सामान्य सी बात है। इस ब्रह्माण्ड जैसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उनकी इच्छा मात्र से लय हो सकते हैं। ऐसा करना किसी कवि, सन्त, या महापुरुष के लिये

सम्भव नहीं है–

मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें हरफ की डोट।

मेरी बुधें एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट।।

कलस हिन्दुस्तानी १८/३१

(१३)

स्थान– उदयपुर का ताल।

(चारों ओर पहाड़ियों का मनोरम दृश्य दिखायी दे रहा है। श्री जी सुन्दरसाथ के मध्य चर्चा कर रहे हैं। उनसे थोड़ी ही दूर पर घुड़सवार पठानों का एक समूह जा रहा है। श्री जी के अलौकिक व्यक्तित्व को देखकर अव्वल खाँ ठिठक जाता है और अपने साथियों से बातचीत करने लगता है)

अव्वल खाँ– नूर मुहम्मद! मेरा दिल इस विचित्र वैरागी को देखकर पता नहीं क्यों खिंचा जा रहा है? क्या तुम बता सकते हो कि ये कौन हैं और कहाँ से आये हैं? यदि तुम मुझसे कुछ भी छिपाओगे तो तुम निश्चित रूप से गुन्हेगार होओगे।

नूर मुहम्मद– ये दीन–ए–इस्लाम के वास्तविक स्वरूप को उजागर कर रहे हैं। कुरआन की हकीकत एवं मारिफत के गुह्य रहस्य एकमात्र इन्हीं के पास हैं।

अव्वल खाँ– (मन ही मन) कुरआन के मारिफत के रहस्य तो केवल अल्लाहतआला ही जानते हैं। कहीं ये आखरूल इमाम मुहम्मद महदी तो नहीं हैं?

(प्रकट रूप में) चलो, निकट चलकर उनका दीदार करते हैं।

(अव्वल खाँ श्री जी को दूर से प्रणाम कर चर्चा सुनने बैठ जाता है और श्री जी के मुखारविन्द की ओर एकटक देखने लगता है। अचानक उसे अल्लाहतआला के नूरी छवि का आभास होता है। वह भावावेश में उठकर खड़ा हो जाता है और अपने चाबुक से स्वयं को मारने लगता

है, सड़ाक.....सड़ाक.....सड़ाक.....)

अव्वल खाँ– मैं कितना बदनसीब हूँ कि अपने सामने अपने अल्लाहतआला को देखकर भी नहीं पहचान सका। मुझे अपने को इस गुनाह की सजा देनी ही होगी।

(पुन: स्वयं को मारने लगता है– सड़ाक.....सड़ाक.....सड़ाक.....)

श्री जी– नहीं.....नहीं.....अव्वल खाँ! ऐसा न करो। आओ, मेरे पास बैठो।

(श्री जी अव्वल खाँ को अपने पास बैठाकर सिर पर हाथ फेरते हैं। अव्वल खाँ की आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होती रहती है)

❖❖❖❖❖

मेंहदी महंमद ढांपे ना रहें, जासो झूठ भी सांच होए।

ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावें सब कोए।।

सनंध ३१/४७

श्री प्राणनाथ जी की महिमा संसार में छिपी नहीं रह सकती है। इनकी शक्ति ऐसी है कि इनकी कृपा मात्र से ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी अखण्ड मुक्ति का सुख प्राप्त करेंगे।

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार।

ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार।।

खुलासा ७/११

जागनी लीला में स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबके न्यायाधीश होकर विराजमान होंगे। लैल–तुल–कद्र के तीसरे तकरार (जागनी लीला) में

जब तारतम ज्ञान का उजाला फैल जायेगा, तो उस समय श्री जी (अक्षरातीत) सबका न्याय करेंगे और सबको दर्शन देंगे।

मैं आया हक का हुकम, हक आवेगा आखिरत।

कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।।

खुलासा १२/५

मुहम्मद साहब ने कहा है कि मैं परब्रह्म के हुक्म का स्वरूप हूँ तथा कियामत के समय स्वयं परब्रह्म आयेंगे। उन्होंने मुझसे कियामत के समय में आने का वायदा किया है और मैं उनकी पहचान के वास्ते सभी निशान लेकर आया हूँ।

कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखिर।

ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर।।

खुलासा १२/१३

अक्षरातीत परब्रह्म ने मुझसे कियामत के समय में आने का वायदा किया है। उन्होंने मुझे संसार में उनके आने की सूचना देने के लिये कहा है, जिससे ब्रह्मसृष्टियों को मेरे आने के सम्बन्ध में पता चल जाये और वे मुझ पर ईमान ला सकें।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार।

भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार।।

खुलासा १२/१४

अक्षरातीत परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में न्यायाधीश बनकर सबका हिसाब लेंगे तथा संसार के लोगों को उनका दर्शन होगा। वे ईश्वरी सृष्टि तथा जीव सृष्टि को आठ बहिश्तों में अखण्ड करेंगे तथा ब्रह्मसृष्टियों

को अक्षरधाम से भी परे परमधाम ले जायेंगे।

सुर असुर अदयाप के, करत लड़ाई दोए।

ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए।। खु. १३/८६

हिन्दू और मुसलमान हमेशा से ही आपस में लड़ते रहे हैं। इनके द्वेष को अक्षरातीत श्री जी साहेब के बिना और कोई भी नहीं मिटा सका है। शेख बदल, मिहीन खाँ, जहान मुहम्मद, अव्वल खान, नूर मुहम्मद आदि का श्री जी के प्रति सर्वस्व समर्पित कर देना सिद्ध करता है कि श्री प्राणनाथ जी ने ही संसार की दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं का एकीकरण करके एक सत्य की पहचान करायी है।

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।

रब आलम जाहेर हुए, सुर असुरों ग्रहे चरन।।

खुलासा १३/१०१

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने पर अज्ञानता का अन्धकार समाप्त हो गया तथा ज्ञान का सवेरा हो गया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही उनके चरणों में आये। हिन्दुओं ने उन्हें विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप तथा मुसलमानों ने आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां के रूप में पहचाना।

अव्वल खाँ ने श्री जी के स्वरूप को पहचान कर ही भावुकता में अपने हाथों से चाबुक मारना प्रारम्भ कर दिया था।

ए तो हकुल आकीन था, सुनते ही ल्याया ईमान।

आया उत दीदार को, कर दई अपनी पहिचान।।

चाबुक अपने हाथ लेय के, मारत अपने अंग।

तब मने किया राज ने, आए बैठो हमारे संग।।

बीतक ४९/८६,८७

(१४)

(औरंगाबाद में पठानों की एक छोटी सी सभा हो रही है)

एक पठान– जब से हमारा उस्ताद "जहान मुहम्मद" उस वैरागी की शरण में गया है, तब से हमे मुँह छिपाना पड़ रहा है।

दूसरा– उसने तो हम सबकी नाक ही कटवा दी है।

तीसरा– अब हम यह दावा कैसे कर सकते हैं कि हमारा इस्लाम सबसे ऊँचा है?

चौथा– हम सभी पहले जहान मुहम्मद को मना करें कि वह उस हिन्दू वैरागी के पास न जाया करे।

(अचानक उधर से जहान मुहम्मद आते हुए दिख जाते हैं। सभी पठान उन्हें घेरकर खड़े हो जाते हैं)

एक पठान– उस्ताद जी! आप उस हिन्दू वैरागी के पास नहीं जा सकते।

दूसरा– आप हमारे उस्ताद जरूर हैं, किन्तु आपने अपनी नादानी से हमारा शिर नीचा कर दिया है।

जहान मुहम्मद– मैं वहाँ क्यों न जाऊँ?

तीसरा– यह हमारी इज्जत का सवाल है। शरा–तोरा में इसकी इजाजत नहीं है।

जहान मुहम्मद– मैंने तुम्हें पढ़ाया है। अब तुम्हीं लोग मुझे सिखापन देने लगे हो।

चौथा– (बहुत ही क्रोध भरी मुद्रा में) हम इस्लाम की रक्षा के लिये कुछ भी कर सकते हैं। यदि आप वहाँ जाना बन्द नहीं करेंगे, तो हम भी यह भूल जायेंगे कि आप कभी हमारे उस्ताद थे।

पाँचवा– आपने उस वैरागी को क्या समझ लिया है?

जहान मुहम्मद– यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। मैं किसकी शरण में जाता हूँ, इसके विषय में पूछने का तुम्हें कोई भी अधिकार नहीं है।

छठा– आपका एक गैर मुस्लिम के पास जाना इस्लाम की शान में गुस्ताखी करना है। हम इसे किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं करेंगे।

जहान मुहम्मद– यदि मैं वहाँ जाना बन्द न करूँ तो?

सातवाँ– इसका परिणाम बहुत ही बुरा होगा।

(इस प्रकार बहुत गर्मागरम तकरार छिड़ जाती है। ये सारी सूचना एक व्यक्ति द्वारा श्री जी तक पहुँच जाती है। जहान मुहम्मद किसी तरह से श्री जी के पास पहुँचते हैं)

श्री जी– जहान मुहम्मद! ये पठान बहुत जाहिल लोग

हैं। इनसे तुम्हारा उलझना ठीक नहीं है।

जहान मुहम्मद– मैंने आपको साक्षात् अल्लाह–तआला के रूप में देखा है। ये दज्जाल लोग मुझे आपके पास आने से रोक रहे थे। भला मैं इनका कहना मानकर अपने ईमान को क्यों खोऊँ?

❖❖❖❖❖

श्री मिहिरराज जी का शरीर भी पञ्चभूतात्मक है। उस तन में विराजमान अक्षरातीत को पहचान लेना एक मुसलमान के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक है, क्योंकि कुरआन परमधाम के नूरी स्वरूप वाले अल्लाह तआला के सिवाय अन्य किसी को भी इबादत के योग्य नहीं मानता है। अव्वल खान तथा जहान मुहम्मद के अन्दर परमधाम की आत्मा है, जिसके कारण उन्होंने अपने प्राणवल्लभ को पहचाना है।

इन समें अव्वल खान, करने आया दीदार।

था उदयपुर का मिलाप, इन पेहेचाने परवरदिगार।।

तब जान मुहम्मदे कहा, मोहे दज्जाल लगा बरजन।

मैं तिनका कहा क्यों करूं, ईमान खतरा होवे मोमिन।।

मैं तो साहेब देखिया, जाहेर अपने नैन।

तहां खतरा होत है, ए मुखथें कहो न बैन।।

बी. सा. ५३/५६,११२,११३

बीतक साहब के इस उद्धरण को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को आत्म–मंथन करना चाहिए कि जब अव्वल खान और जहान मुहम्मद जैसे मुसलमान प्राणनाथ जी को अक्षरातीत मानते हैं, तो हम उन्हें सन्त, कवि, या महापुरुष घोषित करने में अपनी सारी उर्जा का अपव्यय क्यों कर रहे हैं? अपने प्राणेश्वर की ही महिमा खण्डित

करके हमें क्या उपलब्धि होने वाली है?

खासी गिरो के बीच में, आखिर इमाम खावंद होए।

ए जो लिख्या फुरमान में, रूह अल्ला के जामे दोए।।

किरंतन ९४/७

कुरआन में लिखा है कि श्यामा जी दो तनों के अन्दर लीला करेंगी। पहला तन श्री देवचन्द्र जी का तथा दूसरा तन श्री मिहिरराज जी का होगा। दूसरे तन से आखरूल जमां इमाम मेहदी (श्री प्राणनाथ जी) का स्वरूप जाहिर होगा, जो ब्रह्मसृष्टियों के बीच परब्रह्म के स्वरूप में प्रकट होंगे।

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन।

आखिर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन।।

किरंतन ९६/३२

अक्षरातीत धाम धनी ने रसूल मुहम्मद साहेब के हाथ कुरआन को भिजवाया और कहा कि दुनियाँ में सच्चे पैगम्बर के रूप में सबको बताओ कि वक्त आखिरत (कयामत के समय) में जब साक्षात् परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) आयें, तो तुम सभी उन पर विश्वास लाना।

ए बंध धनिएं पेहेले बांधे, सो लिखे मांहे फुरमान।

इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान।।

किरंतन ९६/२३

धनी ने अपने आने से पहले ही कुरआन में लिखवा दिया था कि इस दुनियाँ में अक्षरातीत परब्रह्म (श्री जी) आयेंगे और सारी दुनियां को उनका दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

ले हिसाब सबन पे, करसी कजा अदल।

भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल।।

किरंतन ९६/२४

परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी सबका हिसाब लेकर न्याय करेंगे और चर–अचर सभी के हृदय को निर्मल करके अखण्ड बहिश्तों में मुक्ति देंगे।

जो साहेब किन देख्या नहीं, ना कछू सुनिया कान।

सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।।

किरंतन ९६/२५

जिस अक्षरातीत परब्रह्म को आज दिन तक किसी ने देखा नहीं और अपने कानों से उनका यथार्थ ज्ञान सुना नहीं है, वे स्वयं परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) इस दुनियाँ में आयेंगे और इस सारे ब्रह्माण्ड को ही अखण्ड मुक्ति देंगे।

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर।

कहा रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर।।

किरंतन ९६/२६

रसूल मुहम्मद साहब ने कुरआन का ज्ञान लाकर संसार को बहुत अच्छी तरह से सूचित कर दिया कि सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी अक्षरातीत परब्रह्म आयेंगे (ग्यारहवीं सदी में) और अज्ञानता के अन्धकार को हटाकर ज्ञान का सवेरा करेंगे।

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान।

सो साहेब काजी होय के, जाहेर करसी कुरान।।

किरंतन १०४/५

जिस परब्रह्म अक्षरातीत को आज तक किसी ने अपनी आँखों से नहीं देखा और न कानों से सुना है , वही

परब्रह्म इस संसार में न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे तथा कुरआन के गुह्य भेदों को जाहिर करेंगे।

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल न सके किताब।

सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।।

किरंतन १०४/८

कुरआन में यह भी लिखा है कि इसके भेदों को इस संसार का कोई भी व्यक्ति खोल नहीं सकता है, सिवाय परब्रह्म अक्षरातीत के।

कुरआन की हकीकत एवं मारिफत के भेदों को श्री प्राणनाथ जी ने खोला है। अत: वे ही अक्षरातीत पूर्णब्रह्म हैं।

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे पर मुद्दार।

सोई इमाम मेंहेदी, याकी बुजरकी बेसुमार।।

किरंतन १०८/७

कुरआन में लिखा है कि इस संसार में श्री श्यामा जी (रूह अल्लाह) दो तनों में लीला करेंगी। उनका पहला तन श्री देवचन्द्र जी का होगा तथा दूसरा तन श्री मिहिरराज जी का होगा। दूसरे तन में इमाम मेहदी का स्वरूप जाहिर होगा, जिनकी बेशुमार महिमा है, अर्थात् वह स्वरूप साक्षात् परब्रह्म का ही होगा।

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार।

ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार।।

खुलासा ७/११

स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी न्यायाधीश बनकर विराजमान होंगे। लैल–तुल–कद्र के तीसरे तकरार (जागनी ब्रह्माण्ड) में जब ज्ञान का सवेरा हो

जायेगा, तो उस समय श्री जी सबका हिसाब लेकर न्याय करेंगे और सबको दर्शन देंगे।

मैं आया हक का हुकम, हक आवेगा आखिरत।

कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।।

खुलासा १२/५

रसूल मुहम्मद साहेब ने कहा कि मैं परब्रह्म के हुक्म का स्वरूप आया हूँ और वक्त आखिरत को (कियामत के समय) स्वयं परब्रह्म आयेंगे। उन्होंने मुझसे आने का वायदा किया है और मैं उनकी पहचान के वास्ते सब निशान लाया हूँ।

कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखिर।

ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर।।

खुलासा १२/१३

परब्रह्म ने मेरे से वायदा किया है कि मैं कियामत के समय में आऊँगा। तुम संसार में इस प्रकार सूचना दो कि मेरी ब्रह्मसृष्टियों को मेरे आने पर ईमान आ जाये।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार।

भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार।।

खुलासा १२/१४

परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) न्यायाधीश बनकर सबका हिसाब लेंगे तथा दुनियाँ के लोगों को उनका दीदार होगा। वे सभी जीवों को आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देंगे तथा ब्रह्मसृष्टियों को अक्षरधाम से भी परे परमधाम में ले जायेंगे।

सुर असुर अद्याप के, करत लड़ाई दोए।

ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए।। खु. १३/८६

सुर और असुर (हिन्दू और मुस्लिम) प्रारम्भ से ही आपस में लड़ते रहे हैं। इनके आपसी द्वेष को अक्षरातीत श्री जी के बिना और कोई भी नहीं मिटा सका है।

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।

रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन।।

खुलासा १३/१०१

सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने पर अज्ञानता का अन्धकार समाप्त हो गया तथा ज्ञान का सवेरा हो गया। हिन्दू और मुसलमान सभी उनके चरणों में आये। हिन्दुओं ने उन्हें श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार तथा मुसलमानों ने आखरूल जमां इमाम महदी के रूप में पहचाना।

आरबों सों ऐसा कहा, कागद ए परवान।

आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान।।

खुलासा १४/३

रसूल मुहम्मद साहब ने अरब के लोगों से कहा कि यह कुरआन खुदाई सन्देश है। जब साक्षात् अक्षरातीत परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) इस दुनियाँ में आयेंगे, तो वे स्वयं कुरआन के भेदों को खोलेंगे।

नाम सारे जुदे धरे, पर करी इसारत।

फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।।

खुलासा १४/७

सभी ने परब्रह्म के अलग-अलग नाम रखकर उनके आने का संकेत किया है। जो खुदाई सन्देश कुरआन के गुझ भेदों को खोलकर स्पष्ट करे, वह साक्षात् परब्रह्म का

ही स्वरूप होगा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।

सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढत।।

खुलासा १४/१६

इस प्रकार की साक्षी कुरआन में प्रत्यक्ष रूप से लिखी हैं। परब्रह्म अक्षरातीत हिन्दुओं में आ गये हैं, लेकिन अभी भी जाहिरी मुसलमान परब्रह्म के आने की अरब में राह देख रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं मांहें।

जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें।।

खुलासा १४/१७

कुरआन–हदीसों में लिखा है कि जब परब्रह्म आयेंगे तो

उनके मुख पर परदा होगा अर्थात् वे हिन्दू तन में आयेंगे, किन्तु जाहिरी अर्थ करने वाले मुसलमान इसका भेद नहीं जानते।

ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और।

वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर।।

खुलासा १३/९०

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी इस संसार में तीन कार्य करने के लिये आये हैं–

१. अपनी वाणी के ज्ञान द्वारा हिन्दू–मुसलमानों के आपसी झगड़ों को मिटाना।

२. श्री बिहारी जी और श्री मिहिरराज के बीच गद्दी के झगड़े को मिटाना अर्थात् सिंहासन पर श्रीमुखवाणी को पधराकर गादीवाद को समाप्त करना।

३. हिन्दू–मुसलमानों को वेद–कतेब से छुड़ाकर श्री कुलजम स्वरूप (स्वसं वेद, आखिरी कुरआन) का ज्ञान देना।

(१५)

(आकोट में नदी के किनारे श्री जी दन्त धावन कर रहे हैं। बरार परगने के हाकिम का सेवक शुकदेव नामक एक ब्राह्मण है, जो मस्ती में बड़बड़ाता हुआ चला आ रहा है)

शुकदेव ब्राह्मण– तू ही तू है.....तू ही तू है.....। तूने ही खेल मँगवाया है.....।

(श्री जी की ओर एकटक देखते हुए नदी को पार करने लगता है और बड़बड़ाता भी जाता है)

शुकदेव– तेरे सिवाय और कोई नहीं.....। तू ही तू है, तू ही तू है.....।

कई सुन्दरसाथ– अरे, अरे! पकड़ो उसे। वह तो अब नदी के पानी में डूबने भी लगा है।

(कई सुन्दरसाथ नदी के जल में छलांग लगाते हैं और

उस ब्राह्मण को निकालते हैं)

सुन्दरसाथ– अरे भाई! क्या आपने कुछ खाया है?

शुकदेव– खाना क्या होता है? तू ही तू है.....तू ही तू है।

सुन्दरसाथ– हे धाम धनी! यह तो आप पर इतना फिदा हो चुका है कि इसे अपनी कुछ भी सुध नहीं है। आप इसकी सुरता को संसार में वापस लाने की कृपा करें।

(शुकदेव बुदबुदाता रहता है– तू ही तू है.....तू ही तू है.....तू ही तू है)

❖❖❖❖❖

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ।

तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ।।

किरंतन १०९/२१

श्री प्राणनाथ जी के शब्दो में– "जो कोई भी स्त्री, पुरुष, बालक, या बूढ़ा व्यक्ति मेरी तारतम वाणी को समझ लेगा, वह मुझे साक्षात् परब्रह्म का ही स्वरूप मानेगा।"

वेदों कहया आवसी, बुध ईस्वरों का ईस।

मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।।

खुलासा १२/३१

हिन्दू धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि नारायण आदि ईश्वरों के भी ईश्वर जो सच्चिदानन्द परब्रह्म हैं, वे इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आयेंगे और सभी प्राणियों की अज्ञानता को दूर करके योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड मुक्ति देंगे।

एक बाल दूजा किशोर, तीसरा बुढ़ापन।

सुंदरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन।।

खुलासा १३/७२

धाम धनी ने व्रज में बाल स्वरूप में लीला की, तो रास लीला में किशोर स्वरूप में। अब वे इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के ज्ञानमय (वयोवृद्ध) स्वरूप में आये हैं। इस स्वरूप में ज्ञान की सुन्दरता है, जो पल–पल बढ़ती ही जा रही है।

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन।

यों बुध जागृत नूर की, भई अधिक जोत रोसन।।

खुलासा १३/७३

जिस प्रकार शरीर में बाल्य, किशोर, तथा बुढ़ापे की अवस्थायें बदलती रहती हैं, उसी प्रकार जाग्रत बुद्धि के

ज्ञान का प्रकाश भी व्रज, रास, एवं जागनी में क्रमशः बढ़ता गया है।

व्रज लीला पूरी नींद की लीला है। "पूरी नींद को जो सुपन, कालमाया नाम धराया तिन" (प्रगटवाणी ३७/३२)। इस लीला में श्री कृष्ण जी के तन में विराजमान अक्षर ब्रह्म की आत्मा को कुछ भी पता नहीं था कि मैं कौन हूँ? रास में अक्षर ब्रह्म को तब जाग्रति हुई, जब धनी ने अपना जोश खींचा। इसलिये रास लीला को आधी नींद और आधी जाग्रति की स्थिति में माना जाता है। "कछुक नींद कछुक जाग्रत भए, जोगमाया के सिनगार जो कहे" (प्रगटवाणी ३७/३९), किन्तु जागनी लीला में पूर्ण जाग्रत अवस्था है। श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप दोपहर के उजाले की तरह है। "नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन" (मा.

सा. ४/७१)। "वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम" (ब. क. १२/४) तथा "अब इन उजाले जो न पेहेचानो तो आपन बड़े गुन्हेगार जी" (प्र. हि. २/१६) के इन कथनों से यह स्पष्ट होता है।

हिन्दू कहे धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम।

कहा हमारा होएसी, साहेब आगे हम।। खु. १३/८०

हिन्दू कहते हैं कि हमारे धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, श्रीमद्भागवत्, भविष्य दीपिका, भविष्य पुराण, तथा बृहत्सदाशिव संहिता आदि) में २८वें कलियुग में परब्रह्म के प्रकट होने का वर्णन है। हमारी यह बात निश्चित रूप से सत्य सिद्ध होगी और हमें श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अक्षरातीत परब्रह्म का दर्शन होगा।

(१६)

(राम नगर में शेख खिद्र अपनी सेना के मध्य बैठे हुए हैं। भिखारीदास अपने दोनों साथियों– अब्दुल रहमान और रघुनाथ– के साथ आकर सैनिक रीति से अभिवादन करते हैं)

शेख खिद्र– कहिए भिखारी दास जी! क्या सूचना है?

भिखारी दास– मैं तो इस जमाने के हादी का दीदार करके आया हूँ।

शेख खिद्र– उन्हें हादी के रूप में आपने कैसे पहचाना?

भिखारी दास– हुजूर! कियामत के सातों निशान अब जाहिर हो गये हैं। श्री जी ने वेद–कतेब के सभी भेदों को उजागर कर एक अल्लाह तआला की पहचान करायी है,

इसलिये मैंने उन्हें आखरूल इमाम मुहम्मद महदी या श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के रूप में देखा है।

(यह सुनकर शेख खिद्र कुछ सोचने लगते हैं, तभी....)

सैयद अब्दुल रहमान– हमें तो उनके अन्दर अल्लाह तआला की सूरत दिखायी देती है।

रघुनाथ– मेरा मन भी यही कहता है कि वे साक्षात् परमात्मा के ही स्वरूप हैं।

शेख खिद्र– यदि ऐसी बात है, तो मैं भी उनका दीदार करने के लिये चलता हूँ।

(एक सैनिक को सम्बोधित करते हुए) तुम! पहले जाकर श्री जी को मेरे आने की सूचना दे दो।

❖❖❖❖❖

तुम चलो उतहीं, करावें दीदार।

जो देखो हकीकत उनकी, तो पावो परवर दीगार।।

बी. सा. ५८/१००

शेख खिद्र से भिखारीदास जी कहते हैं कि यदि आप हमारे साथ चलें, तो हम आपको श्री जी के स्वरूप में आये हुए साक्षात् परब्रह्म (अल्लाह तआला) का दर्शन करायें।

आगूं आए खबर दई, आखिर आवेगा साहेब।

रूह अल्ला इमाम उमत, होसी नाजी मजहब।।

खिलवत ११/६५

मुहम्मद साहेब ने ११०० वर्ष पहले से ही यह सूचना दे दी कि कियामत के समय स्वयं परब्रह्म आयेंगे। उस समय रूह अल्लाह (श्यामा जी), इमाम महदी, तथा

मोमिनों का निजानन्द सम्प्रदाय चलेगा, जिसमें सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी।

सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल।

सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन मांहें लैल।।

खिलवत ११/७७

जिन ब्रह्मसृष्टियों के लिये यह खेल बनाया गया, वाणी के प्रकाश में वे अब मिलने लगी हैं। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अक्षरातीत परब्रह्म भी इनके बीच में आये हुए हैं तथा इस संसार में तारतम वाणी का ज्ञान दे रहे हैं।

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम।

हाए हाए ए सुध मोमिनों ना लई, मीठा हक इस्क का आराम।।

खिलवत १२/३१

कुरआन में लिखा है कि इसके भेदों को अल्लाह तआला ही खोलेंगे। यह शोभा एकमात्र श्री प्राणनाथ जी को ही है। श्री महामति जी की आत्मा को इस प्रकार की शोभा देने में श्री राज का मधुर प्रेम छिपा हुआ है, किन्तु आश्चर्य का विषय है कि सुन्दरसाथ को अभी भी इसकी सुध नहीं है।

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान।

सो साहेदी किन ना लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान।।

खिलवत १२/३३

कुरआन–हदीसों के अनुसार खुदा की साक्षी खुदा ही दे सकते हैं, अर्थात् परब्रह्म की पहचान मात्र परब्रह्म ही करा सकते हैं। हाय! हाय! कितने आश्चर्य की बात है कि कुरआन के इस कथन को किसी ने भी नहीं समझा (श्री

जी को नहीं पहचाना)?

कुन्जी भेजी हाथ रूह अल्ला, पर खोल न सके ए।

फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।।

खिलवत १४/७०

श्री राज जी ने सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी (चाबी) दी, लेकिन वे कुरआन के भेदों को नहीं खोल सके। कुरआन की हकीकत एवं मारिफत के भेदों को एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ने ही खोला है, इसलिये वे ही अक्षरातीत हैं। "कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहदी पाक पूरन" (सनंध ४२/१६) का कथन भी यही सिद्ध करता है कि इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के अतिरिक्त अन्य कोई अक्षरातीत नहीं है।

(१७)

(रामनगर में सूरत सिंह अपने निवास के एक कक्ष में अकेले ही टहल रहे हैं तथा धीरे–धीरे बुदबुदाते जाते हैं)

सूरत सिंह– मैंने श्री प्राणनाथ जी को साक्षात् पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द के रूप में देखा है, किन्तु यह बात मैं किससे कहूँ? मेरी बातों पर भला कौन विश्वास करेगा?

(थोड़ी देर पुन: टहलने के बाद) इस मायावी जगत में सभी प्राणी अज्ञानता की नींद में सोये हुए हैं। श्री मिहिरराज जी के मानवीय तन में लीला कर रहे पुरूषोत्तम अक्षरातीत को जब बड़े–बड़े तत्ववेत्ता ही नहीं पहचान पा रहे हैं, तो साधारण लोग भला क्या कर सकते हैं? फिर भी, मुझे यह बात दीवान देवकरण जी से अवश्य कहनी चाहिए।

(सूरत सिंह चलकर दीवान देवकरण जी से मिलते हैं। परस्पर अभिवादन के पश्चात्.....)

देवकरण जी– आपका स्वागत है। कहिए, क्या सेवा करूँ?

सूरत सिंह– देवकरण जी! मैं आपसे एक बहुत ही गोपनीय बात कह रहा हूँ। मैंने केतकी नदी के किनारे परमहंसों का बहुत बड़ा समूह देखा है। उनके साथ श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म ही आये हुए हैं। यदि आप वहाँ मेरे साथ चलें तो मैं निश्चित ही आपको पूर्णब्रह्म का दर्शन कराऊँगा।

देवकरण जी– वहाँ चलना तो मेरा सौभाग्य होगा। चलिये, अभी चलते हैं।

❖❖❖❖❖

श्री जी के मुखारविन्द से प्रवाहित होने वाली ब्रह्मवाणी की अमृत धारा का जिसने भी रसपान कर लिया, उसने उन्हें साक्षात् अक्षरातीत ही माना। "नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ" का कथन इसी सन्दर्भ में है। सूरत सिंह जैसे सुन्दरसाथ की आत्मा ने ब्रह्मवाणी के रस में डूबकर धाम धनी को अपना सर्वस्व ही अर्पण कर दिया।

सूरत सिंह ईमान ल्याइया, देख के दीदार।

सक मन में ना रही, देखा धनी निरधार।।

सुनिया तारतम इनने, देखी हक सूरत।

ए बात मैं किनसों कहों, कौन ल्यावे प्रतीत इत।।

गया दीवान देवकरन पे, एक सुनी मैं बात।

तुमारे आगे कहत हों, मैं देखी हक जात।।

चलो मेरे साथ तुम, मैं कराऊं दीदार।

केतकी पर रहत हैं, देखो धनी निरधार।।

बी. सा. ५९/२–५

मोमिन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए।

भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इम्नदाए।।

किरंतन ७३/३६

सभी धर्मग्रन्थों में यह बात लिखी हुई है कि माया का खेल देखने के लिये आयी हुई ब्रह्मसृष्टियों एवं ईश्वरी सृष्टियों के लिये स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म इस संसार में आयेंगे और समस्त संसार को अखण्ड मुक्ति देंगे।

बोझ अपनो निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो।

नाम सिनगार शोभा सारी, मैं भेख तुमारो लियो।।

किरंतन ६२/१५

इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री महामती जी (श्री इन्द्रावती जी) को अक्षरातीत का नाम (श्री राज, श्री प्राणनाथ, श्री जी) प्राप्त हुआ है। सभी सुन्दरसाथ ने श्री जी को साक्षात् परब्रह्म के ही रूप में मानकर उनकी पूजा की है। सभी मन्दिरों में सन्ध्या में होने वाली सेवा–पूजा इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। सभी आत्माओं को जाग्रत करने के लिये धाम धनी ने परमधाम में वचन दिया था, उसे पूरा करने का उत्तरदायित्व भी इसी स्वरूप (श्री प्राणनाथ जी) को है।

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।

सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।।

किरंतन ६५/१९

वेद–कतेबों में सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान तो लिखी है, किन्तु तारतम ज्ञान न होने से कोई भी जानता नहीं था। अब स्वयं परब्रह्म ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर सभी गुह्यतम (हकीकत–मारिफत) भेदों को स्पष्ट कर रहे हैं। अज्ञानता के सम्पूर्ण अन्धकार को दूर करने के लिये ही परब्रह्म का श्री जी के स्वरूप में प्रकटन हुआ है। "आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन" (किरंतन ९८/७) का कथन यही सिद्ध करता है।

(१८)

(किलकिला नदी के सुरम्य तट पर आम के घने वृक्षों की शीतल छाया वहाँ की मनोहारिता को चार चाँद लगा रही है। पाँच हजार सुन्दरसाथ की संख्या के साथ श्री प्राणनाथ जी वहाँ पर पधारते हैं और वृक्षों की शीतल छाया में बैठ जाते हैं। उन्हें देखकर वनवासी लोग भागे हुए आते हैं)

एक वनवासी– (दूर से चिल्लाते हुए) बाबा जी! बाबा जी! ठहरिये, ठहरिये।

दूसरा वनवासी– इस नदी का जल नहीं पीना, नहीं पीना।

(तेज दौड़ने से दोनों हाँफ रहे हैं। थोड़ी देर के बाद कई और वनवासी एकत्र हो जाते हैं। उनके घबराये हुए चेहरों

को देखकर लालदास जी मुस्करा देते हैं)

लालदास जी– आप लोग इतने परेशान क्यों हो रहे हैं?

तीसरा वनवासी– इस नदी का जल विषैला हो चुका है। इसको पीने वाला जीवित नहीं बच सकता।

लालदास जी– आप लोग इसकी जरा भी चिन्ता न करें। हमारे साथ पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत हैं , जिनके चरणामृत की एक ही बूँद नदी के विष को जड़ से समाप्त कर देगी।

(कुछ सुन्दरसाथ के साथ लालदास जी एक थाल लेकर श्री जी के पास पहुँचते हैं)

लालदास जी– हे धाम धनी! आप करूणा के सागर हैं। इस जागनी के ब्रह्माण्ड में किलकिला के विष को दूर करने की कृपा करें। हम सुन्दरसाथ आपका चरणामृत

लेने आये हैं।

(श्री जी कुछ भी न बोलते हुए मुस्कराते रहते हैं। भीम भाई और लालदास जी थाल में श्री जी के चरण के अँगूठे को धोकर उसे किलकिला में फेंक देते हैं। तत्पश्चात् समस्त सुन्दरसाथ नदी में स्नान करने लगता है)

चौथा वनवासी– अरे! इनके ऊपर तो विष का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा।

पाँचवा वनवासी– यह लीला तो वैसी ही है, जैसे व्रज में कान्हा ने यमुना के विष को दूर करके की थी। लगता है, वही परमात्मा अब यहाँ आ गये हैं।

छठा वनवासी– हमसे बड़ा सौभाग्यशाली इस संसार में कोई नहीं। हमें तो घर बैठे–बैठे साक्षात् परमात्मा ही

मिल गये हैं।

(चारों ओर श्री प्राणनाथ प्यारे का गगनभेदी नाद सुनायी पड़ता है)

❖❖❖❖❖

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।

मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

परिकरमा २/१२

अब परमधाम से स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) आये हैं। उनके प्रकट होने से यह सारी सृष्टि निर्मल हो गयी है। वे संसार के प्राणियों के मोह–अहंकार को नष्ट करके सभी को अखण्ड मुक्ति का सुख देंगे।

ब्रह्मसृष्टि जाहेर करूं, करसी लीला रोसन।

अखण्ड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन।।

परिकरमा २/१५

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने इस संसार में आकर अखण्ड परमधाम के ज्ञान को प्रकट कर दिया है। इस ज्ञान को मैं (महामति) ब्रह्मसृष्टियों में फैला रही हूँ। अब आत्मायें परमधाम की लीला को संसार में प्रकाशित (जाहिर) करेंगी।

तीन ब्रह्माण्ड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट कारन।

आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन।।

परिकरमा २/१६

ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा को पूरा करने के लिये तीन ब्रह्माण्ड (व्रज, रास, और जागनी) बनाये गये हैं। इन तीन ब्रह्माण्डों में उसी अक्षरातीत (श्री प्राणनाथ, श्री राज, श्री जी) ने प्रकट होकर सबकी इच्छा को पूर्ण

किया है।

किलकिला को शुद्ध करने वाले मात्र अक्षरातीत हैं। इसमें रंचमात्र भी संशय नहीं है।

नदी किलकिला तीर पर, उतरे परमहंस आए।

तिन में सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।

तब सब साथ ने मिल के, धोयो चरण अंगूठा राज।

डारयो चरणामृत नदी में, पीछे नहायो सकल समाज।।

बीतक ६०/१२,१५

(१९)

(मऊ में तिंदुनी दरवाजे के पास श्री प्राणनाथ जी सुन्दरसाथ के बीच में बैठे हुए हैं। महाराजा छत्रसाल जी एक सामान्य शिकारी के वेश में थोड़ी दूर पर आकर खड़े हो जाते हैं और अभिवादन करते हैं)

छत्रसाल जी– बाबा जू! राम–राम।

श्री जी– राम–राम, बाबा! यहाँ आकर बैठो।

(छत्रसाल जी बिछौने के किनारे दूर बैठ जाते हैं)

श्री जी– यहाँ आकर मेरे पास बैठो।

(थोड़ी दूर खिसक कर आगे आते हैं, फिर भी, अभी काफी दूर रहते हैं)

श्री जी– अरे भाई! जरा आगे आकर तो बैठो। अब तो तुम मेरे फँदे में आ चुके हो। भाग कर कहाँ जाओगे?

छत्रसाल जी– हूँ! इस ब्रह्माण्ड में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा नहीं है, जो मेरे ऊपर फँदा डाल सके।

श्री जी– यदि विजयाभिनन्द बुद्ध जी तुम्हारे सामने आ जायें, तो क्या तुम उन्हें पहचान सकते हो?

छत्रसाल जी– (अपने गले में लटकती हुई मोहर को दिखाते हुए) यह मुझे बारह वर्ष पूर्व श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ने स्वप्न में दी थी। मैं उसी समय से बुद्ध जी का सेवक बन गया हूँ।

श्री जी– (बिछौने को उठाते हुए) इन मोहरों से अपनी मोहर का जरा मिलान तो करो।

(छत्रसाल जी उनमें से एक मोहर को निकालकर अपनी मोहर से तुलना करते हैं। दोनों में समानता होने पर

उनके चेहरे पर अपने रूखे शब्दों के लिये लज्जा का भाव आता है और वे श्री जी को प्रणाम करके तेज कदमों से चुपचाप महल की ओर चल देते हैं)

छत्रसाल जी– (राजमहल की महिलाओं को सम्बोधित करते हुए) आज हमारे यहाँ साक्षात् पूर्णब्रह्म परमात्मा आये हैं। जिसे भी दर्शन करने की इच्छा हो, वह दर्शन–लाभ करके अपने जीवन को सफल बनाये।

❖❖❖❖❖

संसार के जीव श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं कर सकते। श्री जी को वे मात्र सन्त , कवि, महापुरूष, आचार्य, और कृष्ण भक्त समझते हैं। महाराजा छत्रसाल जी के अन्दर शाकुण्डल की आत्मा है। उन्होंने अपने प्रियतम को पहचानने में जरा भी देर नहीं की।

अन्दर जाए के ए कही, जिन्हें करना होए दीदार।

सो सबहीं कीजियो, आया परवर दिगार।।

बी. सा. ६०/२७

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।

सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावे दीदार सब हक।।

परिकरमा २/१७

ब्रह्मात्माओं की कृपा से चौदह लोकों के सभी जीवों को श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में परब्रह्म का दर्शन होगा और सभी को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी।

जागनी लीला में जिन जीवों को परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का दर्शन नहीं हो पाया है, वे योगमाया के ब्रह्माण्ड में उनका दर्शन प्राप्त करके कृत्य –कृत्य हो जायेंगे। उन्हें अपनी भूल का प्रायश्चित होगा कि हम

संसार में श्री जी को क्यों नहीं पहचान सके थे। वे पश्चाताप में बारम्बार आँसू बहायेंगे।

जिमी सकल जहान जो, हिन्दू या मुसल्मीन।

हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।

सनंध २६/२४

का कथन यही सिद्ध करता है। यहाँ "रसूल" शब्द श्री जी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

अव्वल कहया फुरमान में, इत काजी होसी हक।

करसी कायम सबन को, ऐसी मेहर होसी हक।।

धर्मग्रन्थों (कुरआन, बाइबिल, तथा पुराण संहिता इत्यादि) में ऐसा कहा गया है कि अक्षरातीत परब्रह्म (अल्लाहतआला) सबका न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे और अपनी मेहर से ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड

मुक्ति देंगे।

वेद–कतेब के मारिफत (विज्ञान) सम्बन्धी गुह्यतम् रहस्यों को परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं खोल सका। यह सम्पूर्ण शोभा मात्र श्री जी को ही है।

अर्स बका की हकीकत, मांहे लिखी कतेब वेद।

खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद।।

सिनगार ३/५०

(२०)

(मऊ सहानिया में श्री जी बैठे हुए हैं। गम्भीर मुद्रा में छत्रसाल जी आकर चरणों में प्रणाम करते हैं)

श्री जी– छत्रसाल! तुम इतने गम्भीर क्यों दिखायी दे रहे हो?

छत्रसाल जी– धाम धनी! अफगन खाँ एक विशाल सेना के साथ राजधानी को घेर चुका है। मैं अपनी छोटी सी सेना के साथ कैसे उसका मुकाबला कर सकता हूँ?

(श्री जी मुस्कराते हुए छत्रसाल जी के शिर पर अपना रुमाल और अपना वरद हस्त रख देते हैं)

श्री जी– तुम्हें जरा भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं पल–पल तुम्हारे साथ हूँ। निश्चित रूप से विजय तुम्हारी ही होगी।

(छत्रसाल जी युद्ध के लिये तैयार होकर जा रहे हैं। उनके सैनिकों में आपस में वार्ता चल रही है)

एक सैनिक– भाई! महाराज ने तो श्री प्राणनाथ जी से आशीर्वाद ले ही लिया है। अब देखते हैं, क्या होता है?

दूसरा सैनिक– जिनके चरणामृत के स्पर्श मात्र से पल भर में ही किलकिला का विषैला जल पूर्णतया शुद्ध हो गया, उनका आशीर्वाद तो व्यर्थ नहीं जाना चाहिए।

तीसरा सैनिक– देखो भाई! छत्रसाल जी तो श्री प्राणनाथ जी को परमात्मा ही मानते हैं, किन्तु मैं तो तब मानूंगा, जब अफगन खाँ की इतनी बड़ी विशाल सेना को महाराज पराजित कर दें।

(रात्रि के अन्धकार में दोनों सेनाओं में भयानक युद्ध हो रहा है। मुगल सेना के बहुत से सैनिक मारे जाते हैं और

अफगन खाँ बन्दी बना लिया जाता है। महाराजा छत्रसाल जी विजय प्राप्त करके श्री जी के चरणों में प्रणाम करने आ रहे हैं)

छत्रसाल जी– (मन ही मन) द्वन्द युद्ध में मेरे वार को अफगन खाँ बचा गया था। जब वह मेरे ऊपर प्रहार करना चाहता था, तभी उसके हाथ से तलवार छूट गयी और उसे मेरे अधीन हो जाना पड़ा था। इतना बड़ा चमत्कार श्री जी की कृपा से ही सम्भव हो सका है। यदि श्री प्राणनाथ जी की कृपा नहीं होती, तो उस समय अफगन खाँ की तलवार मेरे ऊपर ही गिरती। मैं अब धाम धनी की अपार महिमा को समझ गया हूँ। कहाँ मेरी एक हजार सैनिकों की छोटी सी सेना और कहाँ आठ हजार सैनिकों की विशाल मुगल सेना? फिर भी, वह गाजर–मूली की तरह काट दी गयी।

(मार्ग में सैनिक भी इसी प्रकार की बातें कर रहे हैं)

एक सैनिक– यह तो गजब का चमत्कार हुआ है। विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह सब कैसे हो गया? कहाँ महाराज की छोटी सी सेना और कहाँ विशाल शत्रु सेना, फिर भी मुगल सेना को हार का स्वाद चखना पड़ा।

दूसरा सैनिक– यह असम्भव सा कार्य बिना पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की कृपा के नहीं हो सकता। अब तो मुझे किसी भी प्रकार का संशय नहीं रहा। निश्चित ही श्री प्राणनाथ जी परब्रह्म परमात्मा के स्वरूप हैं।

❖❖❖❖❖

अक्षरातीत श्री जी की कृपा से ही द्वन्द्व युद्ध में महाराजा छत्रसाल जी की प्राणरक्षा हुई और अफगन खाँ को करारी हार खानी पड़ी।

जब उससे फते करके, आए श्री महाराज।

तब लोकों ने कहा, बिना श्री राज ना होए ए काज।।

बी. सा. ६०/३३

विजिया अभिनंद बुद्ध जी, और नेहेकलंक अवतार।

कायम करसी सब दुनिया, त्रिगुन को पोहोंचावे पार।।

खुलासा १३/५९

विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ही ब्रह्मा, विष्णु, एवं शिव सहित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

खासी गिरो के बीच में, आखिर इमाम खावंद होए।

ए जो लिख्या फुरमान में, रूह अल्ला के जामे दोए।।

किरंतन ९४/७

धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, तथा कुरआन) में लिखा है कि श्यामा जी दो तनों में लीला करेंगी। दूसरे (श्री मिहिरराज जी के) तन में वे परब्रह्म के रूप में प्रसिद्ध (जाहिर) होएँगी।

(२१)

(श्री जी को सुखपाल में बैठाकर महाराजा छत्रसाल जी चौपड़े की हवेली में पधराते हैं। सुखपाल को उठाने की सेवा में एक तरफ छत्रसाल जी स्वयं हैं, तो दूसरी ओर सुशीला महारानी। द्वार पर सुखपाल उतारा जाता है। महाराज की खुशी का कोई ठिकाना नहीं है। महारानी अपनी साड़ी का पाँवड़ा बिछा देती है)

छत्रसाल जी– महारानी! यह आपने क्या कर दिया? पति होने के नाते श्री जी के चरणों में पहले मेरी पाग बिछनी चाहिए।

(यह कहकर साड़ी का पाँवड़ा उठा देते हैं। महारानी सुशीला जी की आँखें छलछला जाती हैं)

सुशीला जी– (मन ही मन) क्या नारी होने की यही

सजा है? क्या मेरे हृदय के भाव कभी भी पूरे नहीं हो पायेंगे?

(छत्रसाल जी अपनी पाग का पाँवड़ा बिछाने लगते हैं। किन्तु यह क्या! पाग छोटी पड़ जाती है)

श्री जी– (मुस्कराते हुए) बेटी! अब अपने भाव पूरे कर लो।

(महारानी का चेहरा खिल उठता है। वे भाव विह्वल होकर अपनी साड़ी को बिछा देती हैं। श्री जी पाँवड़े पर अपने चरण कमल रखकर सिंहासन पर विराजमान हो जाते हैं)

छत्रसाल– धाम धनी! परमधाम में आप युगल स्वरूप हैं। इसलिये मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं आपके साथ श्री बाई जू को भी सिंहासन पर बिठाऊँ और आप दोनों की

आरती उतारूँ।

श्री जी– जैसी तुम्हारी इच्छा।

छत्रसाल जी– (आरती का थाल सजाकर) यहाँ उपस्थित सभी बहनों एवं भाइयों! आज मुझसे अधिक सौभाग्यशाली इस ब्रह्माण्ड में कोई भी नहीं है, क्योंकि मेरे यहाँ अक्षर ब्रह्म से भी परे साक्षात् पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत पधारे हैं। इन्हीं की खोज में शिव और सनकादि लगे रहे, किन्तु न पा सके। इनकी पहचान देने में वेद भी मौन हो जाते हैं। परब्रह्म अपनी आह्लादिनी शक्ति श्यामाजी के साथ मेरे यहाँ विराजमान हुए हैं। इन्हें अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य किसी भी (सन्त, कवि, भक्त, प्रभु आदि) रूप में जो देखेगा, वह कदापि ब्रह्मसृष्टि नहीं हो सकती। अब मेरा सर्वस्व श्री जी के चरणों में अर्पित है।

❖❖❖❖❖

शाकुण्डल की आत्मा ने अपने प्राणप्रियतम को पहचाना और अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। वर्तमान समय में विद्वत वर्ग और प्रमुख स्थानों के अधिपतियों में श्री प्राणनाथ जी को सन्त, कवि, मनीषी, आचार्य, श्री देवचन्द्र जी का शिष्य, और श्री कृष्ण जी का भक्त कहने की जो होड़ लगी हुई है, वह हमें यह सोचने के लिये मजबूर कर रही है कि क्या महाराजा छत्रसाल जी, श्री लालदास जी, एवं अन्य ब्रह्ममुनियों ने श्री प्राणनाथ जी को पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत मानकर भूल की थी? तारतम वाणी के प्रकाश में आने वाला कल ही यह निर्णय करेगा कि सत्य क्या है और किधर है?

चौपड़े की हवेली मिने, तहां पधराए श्री राज।

चले आप सुखपाल ले, कांध पर कुंवर महाराज।।

एही टीका एही पांवड़ो, एही निछावर आए।

श्री प्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि बलि जाए।।

श्री बाई जी को जोड़े राज के, बैठाए कर सनेह।

कहनी में न आवहीं, लगो जुगल सो नेह।।

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए।

कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो, हम चीन्हा तुमे बनाए।।

श्री ठकुरानी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर।

धनी बिना तुम्हें और देखे, सो नहीं मिसल मातवर।।

अब तो कछु न हमारो, दे चुके हम सीस।

आपा रहयो न आप बस, करो जानो जो बकसीस।।

तब बोले श्री राज जी, देखे राणा पातसाह सब।

पर जो कछू करनी अंकूर की, सो इत देखी हम सब।।

बी. सा. ६०/४९,५५–६०

श्रीमुखवाणी के शब्दों में तो श्री प्राणनाथ जी की महिमा को सीमित करने वाले और उसका मौन समर्थन करने वाले, दोनों को ही प्रायश्चित की अग्नि में जलने का दण्ड भुगतना पड़ेगा।

इन मोती का मोल कहो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए।

सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे।।

कयामतनामा ८/५५

(२२)

(श्री पन्ना जी में महाराजा छत्रसाल जी की सभा लगी हुई है। काजी अब्दुल रसूल और श्री लालदास जी के बीच कुरआन के सम्बन्ध में वाद–विवाद चल रहा है)

लालदास जी– काजी साहब! आप हमारे प्रश्नों का उत्तर देने का कष्ट करें। मेरा विशेष सवाल यह है कि कुरआन में संसार की पैदाइश किस प्रकार की लिखी है?

अब्दुल रसूल– मेरा दिल पूरी तरह से साफ है। कुरआन को पढ़ते–पढ़ाते बुढ़ापा आ गया। यदि मेरे कथन और कुरआन के कथन में भेद हो जायेगा, तो मैं हार मान लूँगा। कुरआन में पाँच प्रकार की पैदाइश का वर्णन किया गया है।

(लालदास जी कुरआन खोलकर सामने रख देते हैं

और कहते हैं कि इसमें से खोलकर हमें बतायें। काजी अब्दुल रसूल बार–बार पन्ने पलट रहे हैं, किन्तु प्रमाण मिल नहीं पा रहा है। काजी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं)

लालदास जी– लाइए, मैं ही खोज देता हूँ।

(तीसरे पारे को खोलकर दिखाते हैं)

काजी– (पढ़ने लगते हैं) कुरआन में पाँच प्रकार की पैदाइश का वर्णन इस प्रकार है– १–कुन्न से, २– एक हाथ से, ३– दो हाथ से, ४– मूल इम्तदाए की, और ५–खिलकत की।

लालदास जी– कृपया यह बतायें कि आप इनमें से किस प्रकार की पैदाइश से सम्बन्ध रखते हैं?

(काजी सोच में पड़ जाते हैं। उनका चेहरा उत्तर न दे

पाने के कारण पीला पड़ गया। घबराहट के कारण उनसे कुछ भी बोला नहीं जा रहा है)

बलदीवान– काजी साहब! आपका ज्ञान कहाँ चला गया? आपने तो कुरआन का सबसे बड़ा इल्मी होने का दावा किया था?

(काजी उठकर श्री जी के चरणों में गिर पड़ते हैं)

अब्दुल रसूल– निश्चित रूप से मैंने यह पहचान लिया है कि श्री जी ही आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज़मां हैं।

बलदीवान– यदि आप सच्चे दिल से यह बात कह रहे हैं, तो कुरआन को अपने शिर पर रखकर कसम खाते हुए कहिए।

(यह सुनकर काजी का चेहरा तमतमा जाता है। वे

आवेग में कुरआन को शिर पर रखकर कहने लगते हैं)

अब्दुल रसूल– मैं कुरआन की सौगन्ध खाकर यह बात कह रहा हूँ कि सबे मेयराज में मुहम्मद सल्लिल्लाहो अलैहि वसल्लम से अल्लाहतआला ने फर्दा रोज कियामत के दिन आने का जो वायदा किया था, आज वह वायदा पूरा हो गया है। ये शख्स वही स्वरूप हैं, यानि ये ही "आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज़मां" हैं। यदि मैं किसी लालच या डर के कारण इस विषय में झूठ बोलूँ, तो यह कुरआन मेरा नाश कर देवे।

बलदीवान– (मन ही मन) एक काजी कुरआन की झूठी कसम तो किसी भी स्थिति में नहीं खा सकता। किन्तु अब पण्डितों से भी शास्त्रार्थ करवाना चाहिए।

हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा ईमाम।

लिखे फैल सबन के, जासो पेहेचानिये तमाम।।

मारफत सागर ५/६

मुहम्मद साहब ने कुरआन में कहा है कि वक्त आखिरत को मैं परब्रह्म (अल्लाह तआला) के साथ आऊँगा। मेरे साथ इस्राफील (जाग्रत बुद्धि), रूह अल्लाह (श्यामा जी), तथा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी भी होंगे।

जब मोंह मुसाफे खोलिया, तब पट न आड़े हक।

तब दीदार पावे दुनियां, जो हक इलमें हुई बेसक।।

मारफत सागर ४/६०

जब कुरआन के सभी रहस्य स्पष्ट हो गये, तब परब्रह्म के सम्बन्ध में किसी को किसी भी प्रकार का संशय नहीं रहा। तारतम वाणी के ज्ञान से संशय रहित होकर संसार

के लोगों ने अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी का दीदार प्राप्त करने का सौभाग्य पा लिया।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब।

ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखिरी खिताब।।

मारफत सागर १२/४८

झूठे दिल वाले जाहिरी मुसलमान इतना भी नहीं समझते हैं कि कुरआन के गुह्य रहस्यों को एकमात्र परब्रह्म (श्री जी) ही खोल सकते हैं। इतना महान कार्य अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं कर सकता। यह शोभा तो मात्र श्री जी की ही है।

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ।

सो हादिएं देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इंसाफ।।

मारफत सागर १२/४३

मक्का के अगुए लोगों ने सख्त कसम खाते हुए वसीयतनामा लिखकर भेजा कि हमसे कुरआन तथा ईमान उठ गया है। इमाम महदी ने नूरी झण्डा हिन्दुस्तान में खड़ा कर दिया है। हिन्दुस्तान में प्रकट होने वाले परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) ही सबका न्याय करेंगे।

जोलों न चीन्हें महंमद को, तो लों सुध ना जमाने।

तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।

मारफत सागर १२/५०

जब तक इस संसार के लोग परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं कर लेते, तब तक उनको जमाने की सुध नहीं हो सकती है। उन्हें यह भी सुध नहीं हो सकती है कि हमारा लाभ किसमें है तथा हानि किसमें है?

जब आवे यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार।

काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार।।

मारफत सागर १२/७३

कुरआन–हदीसों में लिखा है कि जब आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथ जी) अपने मोमिनों को लेकर इस संसार में पधारेंगे, तो वे कुरआन के सभी भेदों को खोलकर सबको दर्शन देंगे। वे न्यायाधीश के रूप में सबका न्याय करेंगे। अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के बिना सारे ब्रह्माण्ड के लिये अखण्ड मुक्ति का द्वार अन्य कोई भी नहीं खोल सकता है।

(२३)

(महाराजा छत्रसाल जी के सभाभवन में रात्रि का प्रथम प्रहर चल रहा है। सभा में शास्त्रार्थ का आयोजन है, जिसमें सुन्दर, वल्लभ, और बद्रीदास आदि पण्डित आये हुए हैं। सबके प्रतिनिधि के रूप में बद्रीदास जी हैं और दूसरी तरफ स्वयं महाराजा छत्रसाल जी हैं)

छत्रसाल जी– आप मेरे इन प्रश्नों का यथोचित उत्तर देने का कष्ट करें। धाम कौन–कौन से हैं? आप किस धाम के स्वरूप को मानते हैं? आप किस लोक और किस खण्ड में हैं तथा आपके इष्ट किस लोक में हैं? क्या शरीर त्यागे बिना उनसे कोई भी मिल सकता है?

बद्रीदास जी– इन प्रश्नों का वास्तविक उत्तर देने का सामर्थ्य परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी में भी नहीं है।

छत्रसाल जी– आपकी इस स्पष्टवादिता के कारण मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। धाम धनी की आप पर अति कृपा हो।

❖❖❖❖❖

सुर असुर सबों के ए पति, सब पर एकै दया।

देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाह्या।।

किरंतन ५९/७

श्री प्राणनाथ जी हिन्दू–मुस्लिम सबके ही परब्रह्म (खुदा) हैं। उनकी कृपादृष्टि सभी पर समान है। अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी सभी को उनकी इच्छा के अनुरूप होकर दर्शन देते हैं। किसी को परमधाम के नूरमयी स्वरूप वाले श्री राज जी के रूप में दर्शन देते हैं, तो किसी को व्रज–रास के श्री कृष्ण रूप में, और किसी

को अरब वाले स्वरूप में। कोई–कोई उन्हें सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के रूप में भी देखते हैं।

मांधा जणाया सभ के, डियण के आकीन।

ईंदो रब आलम जो, सभ कंदो हिक दीन।।

सिन्धी ८/७

संसार के लोगों को विश्वास दिलाने के लिये ही श्री राज जी ने अपने आदेश से सभी धर्मग्रन्थों में यह साक्षी दिलवा दी है कि सम्पूर्ण जगत् के स्वामी परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी आने वाले हैं, जो सभी को एक सत्य धर्म की पहचान करायेंगे।

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक।

सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक।।

मारफत सागर १३/२५

पहले से ही जिन्होंने साधना करके यह वर माँग रखा था कि श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के आने पर उन्हें मानव तन मिले, वह समय अब आ गया है। अब सभी लोग परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के चरणों में दौड़–दौड़कर आ रहे हैं। इस कार्य में अब कोई भी पीछे नहीं रहेगा।

(२४)

(औरंगज़ेब बादशाह महल में बैठा हुआ है। सेवक उसके हाथों में एक पत्र पकड़ा जाता है। बादशाह उसे पढ़ने लगता है)

औरंगज़ेब– (मन ही मन) कालपी के मौलवियों तथा काज़ी के द्वारा लिखा हुआ यह महज़रनामा तो स्पष्ट रूप से यही सिद्ध कर रहा है कि कियामत के सातों निशान जाहिर हो चुके हैं। अल्लाह तआला इस संसार में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज़मां के रूप में जाहिर हो चुके हैं।

अरे! यह क्या हो रहा है? छत्रसाल के पास आखरूल इमाम महदी पहुँच चुके हैं। उनसे होने वाली चर्चा में मौलवियों तथा काज़ी ने उन्हें इमाम महदी के रूप में

मान लिया है। उनका यह इकरारनामा तो मुझे शर्मिन्दा कर रहा है कि मैंने घर आये हुए खुदा को अपनी हुकुमत के नशे में नहीं पहचाना।

ओह! अब मैं क्या करूँ? इमाम महदी के भेजे हुए मोमिनों के साथ मेरे कोतवाल ने बुरा व्यवहार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि दिन-प्रतिदिन मेरी हुकूमत क्षीण होती जा रही है। मैं तख्ते-ताऊस से भी नीचे गिर चुका हूँ। मेरा कोई भी फौज़दार अब तक छत्रसाल को जीत नहीं पाया है। दर्जनों लड़ाइयों में मेरी फौज़ हार चुकी है। जबकि मैंने यह भी सुना है कि इमाम महदी की मेहर से पन्ना की जमीन हीरे उगलने लगी है।

अब मैं क्या करूँ? क्या इमाम महदी के चरणों में चला जाऊँ? किन्तु उनका वजूद तो एक हिन्दू का है। आखिर एक हिन्दू के वजूद को मैं सिज्दा कैसे कर सकता हूँ।

जिस शरियत की ओट में मैंने सारे हिन्दुस्तान पर हुकूमत की है, उसी शरियत को मैं कैसे छोड़ दूँ? मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं किसको पकडूँ ? इमाम महदी के रूप में आये हुए अल्लाह तआला के पाक कदमों में जाऊँ या अपनी शरा–तोरा की हुकुमत चलाता रहूँ?

❖❖❖❖❖

कालपी में होने वाली कुरआन की चर्चा में सभी मौलवियों ने खुलेआम यह स्वीकार कर लिया कि श्री जी ही आखरूल इमाम मुहम्मद महदी के रूप में खुद खुदा हैं।

राठ खड़ौत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे।

इत मुल्ला काजी सैयद, सब जमा किए।।

तिनसो कुरान हदीसों की, चरचा करी जब।

जेर हुए इसलाम में, सबों मेहेजर लिख दिया तब।।

ए हम तहकीक किया, खाविन्द जमाने का।

हम अपनी आंखों देखिया, जो कुरान हदीसों लिखा।।

बी. सा. ६०/१५०-१५२

तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किनको बोए।

जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए।।

मारफत सागर १६/६९

मारिफत के तीस हजार हरुफ जो अत्यन्त गुह्य हैं, वे मुहम्मद साहब की जबान पर नहीं चढ़ सके। संसार में किसी को उनकी सुगन्धि भी नहीं मिल सकी। उनके बारे में जिब्रील फरिश्ता भी कुछ नहीं जान सका। मारिफत

की उन बातों को स्वयं अल्लाहतआला ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर स्पष्ट किया है।

यह प्रसंग खुलासा १२/११,१२ में भी वर्णित है–

कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।

कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार।।

बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।

बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए।।

हदीसों में मुहम्मद साहब ने कहा है कि हिन्दुस्तान में खुद खुदा (श्री प्राणनाथ जी) सबका न्याय करेंगे और सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देने की शोभा ब्रह्मसृष्टियों को प्राप्त होगी।

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब।

खासल खास उमत, सब लेसी सबाब।।

मारफत सागर १६/११३

संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना तभी हो सकती है, जब सभी के दिल के संशय मिट जायें। यह कार्य परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के बिना और कोई भी नहीं कर सकता। चौदह लोकों के सारे प्राणी मिलकर भी ऐसा नहीं कर सकते।

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवे सब दिल।

ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवे मिल।।

छोटा कयामतनामा २/२४

श्री प्राणनाथ जी हिन्दुओं के लिये जहाँ विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप हैं, तो मुसलमानों के लिये

आखरूल इमाम महदी। इसी प्रकार वे क्रिश्चियनों के लिये आखिरी ईसा और यहुदियों के लिये अन्तिम समय में आने वाले मूसा हैं।

जोतिष कहे विजियाभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद।

अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक।।

जहूद कहे मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटे सब कोए।

यों सारों ने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनी की कही।।

बड़ा कयामतनामा १/२८,२९

कियामत की मधुर घड़ी में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबको अल्लाह तआला का दर्शन हुआ है और जागनी लीला का आनन्द मिला है।

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम।

भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम।।

छोटा कयामतनामा २/१००

(२५)

(श्री पन्ना जी में सन्ध्या के समय बंगला जी दरबार में श्री महामति जी ध्यानावस्थित दिखाई दे रहे हैं। उनके समक्ष सुन्दरसाथ उदासमग्न अवस्था में बैठे हुए हैं। श्री महामति जी ध्यान से विरत होकर अपनी आँखें खोलते हैं)

महामति जी– (सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए) अरे! आप लोग अभी तक बैठे हुए हैं। जाइए! भोजन कर आइये।

(सुन्दरसाथ डबडबायी आँखों से श्री जी की ओर निहार रहे हैं। उनकी न उठने की इच्छा देखकर श्री महामति जी पुन: कहते हैं)

मेरी आत्मा अब दिन–रात परमधाम के ध्यान में ही

डूबी रहना चाहती है। आप लोग मेरा निर्देश मानकर भोजन करने जाइए।

(अनचाहे ढंग से सुन्दरसाथ उठते हैं और इधर श्री महामति जी समाधि में डूब जाते हैं। सुन्दरसाथ वापस आकर बैठ जाते हैं। प्रात: ब्रह्ममुहुर्त में श्री महामति जी इतनी गहन समाधि में डूब जाते हैं कि उनकी श्वास प्रश्वास की गति रूक जाती है। अंग–प्रत्यंग जड़ हो जाते हैं। सुन्दरसाथ इस स्थिति को सहन नहीं कर पाते और देखते–देखते सैकड़ों सुन्दरसाथ अपना तन छोड़ देते हैं। महाराजा छत्रसाल जी बंगला जी दरबार में प्रवेश करते हैं)

छत्रसाल जी– (मन ही मन) आज मुझे क्या–क्या देखना पड़ रहा है? हँसती–खिलखिलाती पद्मावती पुरी में चारों ओर इस प्रकार की भयानक स्तब्धता क्यों

दिखायी पड़ रही है? आज तो ऐसा लग रहा है कि धरती रो रही है, आकाश रो रहा है.....।

सभी दिशाओं से क्रन्दन का आभास हो रहा है। रोती हुई ये दिशायें क्या कहना चाह रही हैं? शीतल, मन्द, और सुगन्धित हवा के झोंकों की जगह आज विरह–व्यथा का अनुभव कराने वाली गर्म हवा क्यों बह रही है?

ओह! यह मैं क्या देख रहा हूँ? मेरे प्राणेश्वर भी बिल्कुल शान्त बैठे हैं। मैं चारों ओर ब्रह्ममुनियों के बिखरे हुए शव देख रहा हूँ? क्या यही देखने के लिये मैं आया हूँ?

(सिंहासन के पास जाकर श्री जी के चरणों में प्रणाम करते हैं। कुछ उत्तर न मिलने पर बोलते हैं)

हे प्राणेश्वर! आपका छत्ता आपके पास आया है।

(कुछ देर रुककर सूनी आँखों से श्री जी की ओर देखते

हुए) आप बोलते क्यों नहीं ? मैं आपका छत्ता हूँ.....छत्ता.....।

(बिलखते हुए) आज आपको क्या हो गया है? न तो आप मेरी ओर देख रहे हैं और न बोल रहे हैं। क्या आप अपने छत्ता से भी रूठ गये हैं?

(आँसुओं से भीगे चेहरे के साथ) मेरे राज रसिक! मुझे छोड़कर आप भी अकेले नहीं रह सकते। मेरी ओर देखिए.....देखिए।

(उत्तर न मिलने पर) ठीक है.....आप बोलना नहीं चाहते.....। आपकी दी हुई जिस तलवार ने यवनों का रक्तपान किया है, अब वह मेरा भी प्राणान्त कर सकती है।

(झटके से कमर से अपनी तलवार निकाल लेते हैं और

जैसे ही अपनी छाती में मारना चाहते हैं, मुस्कराते हुए श्री जी उनका हाथ पकड़ लेते हैं)

श्री जी– छत्ता! तूने केवल मेरे शरीर को ही प्राणनाथ समझ रखा है? मैं तो तेरे साथ पल–पल था और हमेशा तेरे साथ ही रहूँगा।

(अपनी पीठ पर घोड़े के खुरों के निशान दिखाते हुए) यह देखो! जब तुम्हारा घोड़ा केन नदी में डूब रहा था, उस समय मैंने ही तुम्हें बचाया था। मैं अपनी आत्माओं से एक पल के लिये भी अलग नहीं हो सकता। छत्ता! श्रीमुखवाणी को मेरा ज्ञानमय कलेवर मानना और सुन्दरसाथ के हृदय में मेरी ही छवि देखना। मैं स्वप्न में भी तुमसे अलग नहीं हो सकता। सुन्दरसाथ को जाग्रत करने का उत्तरदायित्व मैं तुम्हें सौंपता हूँ। अब मैं गुम्मट जी में झूले के सिंहासन पर विराजमान होना चाहता हूँ।

वहाँ पर मैं तुमसे प्रत्यक्ष बातें करता रहूँगा। जब तक सभी आत्माओं की जागनी नहीं हो जाती, तब तक मैं परमधाम नहीं जा सकता।

❖❖❖❖❖

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें।

पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।।

छोटा कयामतनामा १/८७

जब आत्मा इस संसार में जाग्रत हो जाती है और महाप्रलय से पहले अपने पञ्चभौतिक तन को छोड़ती है, तो अपने जीव के साथ पन्ना जी गुम्मट मन्दिर पहुँच जाती है, क्योंकि धाम धनी के चरणों में ही उसका वास्तविक ठिकाना है। उसका पाँच तत्वों का झूठा शरीर पाँच तत्वों में मिल जाता है और आत्मा श्री जी के चरणों

में पहुँच जाती है।

ओ उरझे नाम जुदे धर, रब आलम का आया आखिर।

अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब।।

बड़ा कयामतनामा १/३०

संसार के सभी पन्थों के लोग परब्रह्म के अलग–अलग नामों में उलझे हुए हैं, जबकि सबके परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी आ गये हैं। अब सभी लोग अपनी–अपनी भाषा में, अपने–अपने ग्रन्थों से समझ जायेंगे। धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने सभी को उन्हीं की भाषा में उनके ही ग्रन्थों से समझाया है, इसलिये अब कोई भी सत्य से अलग नहीं रहेगा।

सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत।

ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीम के द्वारे।।

बड़ा कयामतनामा १/३४

कुरआन में लिखा है कि परब्रह्म अपने किये हुए वायदे के अनुसार कियामत के समय ग्यारहवीं सदी में आयेंगे तथा सारा संसार उनकी पूजा करेगा। वे तारतम वाणी से सबको अखण्ड परमधाम की पहचान करायेंगे। यह बात कुरआन के तीसरे सिपारे में लिखी हुई है।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब।

पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए का पाओ जब।।

बड़ा कयामतनामा ३/२५

परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी पाँच तत्व के शरीर रूपी परदे में छिपे हुए हैं, जिसे आपकी आत्मा पहचान नहीं पा रही है। श्री प्राणनाथ जी के ऊपर अपने तन, मन, धन को समर्पित करके अपने अहंकार को मिटा दो।

इसके बाद तुम्हें लाभ ही लाभ मिलेगा। तुम्हें धाम धनी के अखण्ड आनन्द की अथाह सम्पदा मिलेगी।

बन्दगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवे इन सूल।

ऐ दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए।।

बड़ा कयामतनामा ४/१३

धर्मग्रन्थों कुरआन, हदीस, पुराण संहिता, आदि में लिखा है कि श्यामा जी के दूसरे तन में श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप उजागर (जाहिर) होगा, जो सबकी बन्दगी को स्वीकार करेंगे। शब्दों के बाह्य अर्थों से इनके स्वरूप की वास्तविक पहचान नहीं हो सकती।

उमी आप पढ़े कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।

काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर।।

बड़ा कयामतनामा ४/२५

श्री प्राणनाथ जी की कृपा से अनपढ़ सुन्दरसाथ कुरआन पढ़ते हैं तथा उसके गुह्य रहस्यों को समझते हैं। बाह्य अर्थों में भटकने वाले लोगों ! आप लोग दिल के कानों से सुनकर विचार कीजिए कि खुदा परब्रह्म ने कियामत के समय में आने का जो वायदा किया था, वह पूरा हो गया है अर्थात् परब्रह्म श्री पद्मावती पुरी धाम पन्ना में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में विराजमान हैं। उनके स्वरूप को बाह्य आँखों से न देखिए, अन्दर की आँखों से देखिए और पहचानिए।

ब्रह्माण्ड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।

गवाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।।

बड़ा कयामतनामा १/३३

श्री प्राणनाथ जी ने संसार के सभी मत–मतान्तारों के

झगड़ों को मिटाकर एक सत्य का सर्वोपरि मार्ग दर्शाया है। ये परब्रह्म के साक्षात् स्वरूप हैं, जो हुक्म की ओट में अपनी साक्षी स्वयं दे रहे हैं।

तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे।

एक ब्रज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापन में भोर।।

बड़ा कयामतनामा ६/२८

कुरआन के तीसवें पारे में खुदा परब्रह्म के तीन स्वरूपों का वर्णन है, जो तीनों तकरार व्रज, रास, एवं जागनी में आत्माओं के साथ रहे। व्रज में अक्षरातीत ने बाल स्वरूप में, रास में किशोरावस्था में, तथा जागनी में ज्ञानमयी स्वरूप वृद्धावस्था में लीला की है। इस जागनी लीला में उन्होंने अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर ज्ञान का प्रात:काल कर दिया है।

बशरी, मल्की, तथा हकी सूरत के सम्बन्ध में भी यही स्थिति है।

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी।

खोली राह आखिर बाग की, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी।।

बड़ा कयामतनामा ८/४७

बशरी रसूल मुहम्मद साहब, मल्की सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी, तथा हकी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूपों में ज्ञान की अवस्था क्रमश: बढ़ती गयी है। श्री प्राणनाथ जी ने परमधाम के बागों का भ्रमण कराया है। मिहिरराज, इन्द्रावती, महामति की अवस्था से होते हुए ये पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप में श्री पन्ना जी में विराजमान हुए।

किरन्तन ग्रन्थ १०८/७ में स्पष्ट कहा गया है–

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे पर मुद्दार।

सोई इमाम मेंहेदी, याकी बुजरकी बेसुमार।।

अर्थात् श्यामा जी के दूसरे तन से ही अक्षरातीत का स्वरूप उजागर होगा। इस स्वरूप की महिमा अनन्त है।

और लिख्या सिपारे पांच में, सो नीके कर देखो तुमे।

कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी।।

बड़ा कयामतनामा ७/७

कुरआन के पाँचवें सिपारे में यह बात संकेतों में लिखी है, जिसे आप अच्छी तरह से देखिए। इससे आपको यह बात विदित हो जायेगी कि पूर्ण ब्रह्म की विशेष कृपा हिन्दुओं पर हुई है, क्योंकि उन्होंने इस खेल में एक हिन्दू श्री मिहिरराज जी का तन धारण किया है।

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत।

इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक।।

बड़ा कयामतनामा ७/१९

यह हिन्दुओं का परम सौभाग्य है कि पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द एक हिन्दू तन में इमाम महदी के रूप में जाहिर हुए। इनको परब्रह्म मानने में जो संशय करता है, वह काफिर बेईमान है।

उल्लू न चाहे उग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।

ए सुन वाका जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।।

चमगादड़ तथा उल्लू को केवल रात्रि में ही दिखायी देता है, दिन में नहीं। वे कभी भी नहीं चाहते कि सूर्य निकले, क्योंकि उन्हें सूर्य के प्रकाश में दिखायी ही नहीं पड़ता। श्री कुलजम स्वरूप की वाणी से अक्षरातीत श्री प्राणनाथ

जी के प्रकटन की बात सुनकर भी जो ईमान नहीं लाते हैं, वे चमगादड़ और उल्लू के समान कहे गये हैं।

आगूं नव सदीय के, कहा होसी रूहों मिलाप।

बुजरक मिलावा होएसी, देवे दीदार खुदा आप।।

बड़ा कयामतनामा ९/४

कुरआन में लिखा है कि नवीं सदी के बाद रूहों का मिलाप होगा और इस बड़े मेले में स्वयं परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी आकर सभी को दर्शन देंगे।

रूह अल्ला रोसन ज्यादा कहा, दूजा अपना नाम।

एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल ईमाम।।

बड़ा कयामतनामा ९/६

श्री श्यामा जी को अपने दूसरे तन में श्री प्राणनाथ जी

के स्वरूप में अधिक शोभा मिली। इस स्वरूप में उन्होंने एक बन्दगी का हजार गुना फल दिया।

रूहों को होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप।

होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार।।

बड़ा कयामतनामा १०/९

ग्यारहवीं सदी में परमधाम में रहने वाली आत्माओं का श्री प्राणनाथ जी से मिलन होगा। श्री प्राणनाथ जी परब्रह्म के स्वरूप में सबको दर्शन देंगे। इनके स्वरूप में बशरी, मल्की, तथा हक्की तीनों सूरतें विराजमान होंगी।

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।

पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम।।

बड़ा कयामतनामा १२/४

दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, अर्थात् वि.सं. १६३८ में, मल्की सूरत श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) का प्रकटन हुआ। इसके बाद आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में तीसरा स्वरूप हक्की सूरत प्रकट हुआ। कुरआन में मल्की सूरत को चन्द्रमा तथा हक्की सूरत को सूर्य कहकर वर्णित किया गया है।

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊ आड़ा अंतर।

उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी।।

बड़ा कयामतनामा १२/५

कुरआन के इन रहस्यों को आत्मिक दृष्टि से ही देखना। तुम्हारे ऊपर बाह्य दृष्टि का जो पर्दा है , उसे मैं समाप्त कर देता हूँ। सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के बाद सबको परमधाम की राह पर ले चलने वाले श्री प्राणनाथ जी हैं,

जिनकी महिमा खुदा के समान कही गयी है अर्थात् ये स्वयं अक्षरातीत हैं।

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे।

इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहरबान दिल पाक।।

बड़ा कयामतनामा १२/७

एक स्वरूप सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी से दूसरे स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की महिमा अधिक है। श्री प्राणनाथ जी ने परमधाम के २५ पक्षों की खुशखबरी ब्रह्ममुनियों को दी है। ये सारे ब्रह्माण्ड के परब्रह्म हैं और सब पर मेहरबान हैं। इनके विराजमान होने का स्थान श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम में श्री गुम्मट जी मन्दिर है, जिसकी चौखट (देहलीज) पर संसार के सभी प्राणी आकर नतमस्तक होंगे।

"करसी लीला बरस दस तोड़ी" (किरंतन ५/१४) तथा "ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देश" (किरंतन ५५/१२) के इन कथनों का यही आशय है।

भोम भली भरथ खण्ड की, जहां आई निध नेहेचल।

और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।

जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन।।

तिन अच्छी थे भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिन्दुस्तान।

जहां महंमद मेंहदी आए के, जाहेर किया फुरमान।।

सनंध १३/२,४,५

अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी पर भारतवर्ष श्रेष्ठ है। इसकी सातों पुरियों अयोध्या, काशी, मथुरा, उज्जैन, हरिद्वार, काञ्ची,

तथा द्वारिका से नवतनपुरी श्रेष्ठ है, क्योंकि सबसे पहले धाम धनी द्वारा तारतम ज्ञान का प्रकाश यहीं पर प्रकट हुआ। किन्तु नवतनपुरी से भी श्रेष्ठ श्री पद्मावती पुरी है, जहाँ परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ने आकर तारतम ज्ञान के तारतम खिलवत, परिक्रमा, सागर, तथा श्रृंगार को प्रकट किया।

❖❖❖❖❖

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ

जिनके जैसा पहले न कोई था, न है, न कभी होगा।

जिनके स्वरूप में स्वयं सच्चिदानन्द परब्रह्म ही जागनी लीला कर रहे हैं।

जिनके चरणों में अनन्त ज्ञान , प्रेम, आनन्द, और शान्ति का सागर लहरा रहा है।

जिनकी कृपा के सागर की एक बूँद से ही समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति का उपहार मिला है।

जिनके हृदय से प्रवाहित होने वाली तारतम वाणी की अमृतधारा समस्त विश्व को अपने आँचल में समेट लेने वाली है।

जिनको अपने हृदय मन्दिर में बसा लेने पर एकरूपता का मधुर अहसास होता है।

उस प्राणेश्वर, प्राणप्रियतम, प्राणवल्लभ, प्राणजीवन, प्राणनाथ के चरणों में हमारा सर्वस्व समर्पण है।

हमारी अन्तरात्मा की यही पुकार है–

बस तू ही तू है, तू ही तू है, तू ही तू है

❖❖❖❖❖